04- ऊर्जस्वीः सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा देती पुस्तक

05- मानसिक जद्दोजहद के बाद की कला और विचार

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 22 सितंबर, 2024

06-चाय वाले युवक को मादक पदार्थ बेचने वाला बताकर पुलिस...

07- ये फ़िल्में 'स्त्री-2' के हिट होने की पायदान बनी

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 326 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

यह हिमाचल प्रदेश की लाहौल स्पीति जिले में काजा से 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित की गोम्पा (की मोनेस्ट्री) है। इस मठ की स्थापना 13वीं शताब्दी में हुई थी। यह स्पीती क्षेत्र का सबसे बड़ा मठ है।

फोटो- पंकज शर्मा

अक्टूबर में बड़ी सौगात देने की तैयारी में पीएम मोदी

वरिष्ठनागरिकों के लिए लॉन्च होगी आयुष्मान भारत योजना

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार आने वाले अक्टूबर महीने में बड़ी सौगात देने की तैयारी में है। विस्तारित आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लॉन्च की जाएगी, जिसमें 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी लोग शामिल होंगे। भले ही उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अक्टूबर में शुरू की जाने वाली इस विस्तारित योजना से लगभग 4.5 करोड़ परिवारों के लगभग 6 करोड़ नागरिकों को लाभ मिलेगा। एबी

पीएम-जेएवाई के तहत पहले से ही कवर किए गए परिवारों से संबंधित 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को स्वयं के लिए प्रति वर्ष 5 लाख रुपये तक का अतिरिक्त टॉप-अप कवर मिलेगा। इसे उन्हें 70 वर्ष से कम आयु के परिवार के अन्य सदस्यों के साथ साझा नहीं करना होगा। मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक जो निजी स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों या कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत हैं, वे एबी पीएम-जेएवाई के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने के पात्र होंगे।

ऑनलाइन वैक्सीन मैनेजमेंट पोर्टल यू-विन की तैयारी

पीएम मोदी अक्टूबर में ऑनलाइन वैक्सीन मैनेजमेंट पोर्टल यू-विन की भी शुरुआत करेंगे, जिसे फिलहाल प्रायोगिक आधार पर ऑपरेट किया जा रहा है। यह पोर्टल गर्भवती महिलाओं के साथ-साथ जन्म से लेकर 17 वर्ष की आयु तक के बच्चों के टीकाकरण और दवाओं का स्थायी डिजिटल रिकॉर्ड रखने के लिए बनाया गया है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा, यह पोर्टल 11 क्षेत्रीय भाषाओं में काम करेगा और किसी भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें स्व-पंजीकरण सुविधा और स्वचालित संदेश अलर्ट की सुविधा भी होगी। जेपी नड्डा ने बताया कि 16 सितंबर तक 6.46 करोड़ लाभार्थियों ने पोर्टल पर पंजीकरण कराया। 1.04 करोड़ टीकाकरण सत्र आयोजित किए गए और 23.06 करोड़ टीके लगाए गए। नड्डा ने मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के 100 दिन पूरे होने के अवसर पर संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह जानकारी दी।

सुप्रभात

अंजुरी भर जल छोड़ा रोज़
और मन भर लिया कि
तुम अपने घर से प्यासे
नहीं लौटे हो
पर जिस घर की भूख के इंतज़ाम में
तुम भूले रहे अपनी
हर प्यास....
वो तो अधूरी है अब तक
प्यास पानी की ही तो नहीं होती हमेशा...
तुम्हारे जाने के बाद ये समझ आया हमें
कि मन भर जी लेने की प्यास
किसी अंजुरी में नहीं समाती....

तुम्हारे नाम का निवाला निकाला रोज़
थाली में समेटा तुम्हारा इच्छा भोज
इसमें कहां शामिल है
जवानी में सफेदी ओढ़ चुकीं
हसरतें तुम्हारीं...
ज़रुरतों से हारकर हर बार छोड़ी जाती रहीं
मुट्ठी भर कामनाएं तुम्हारी ...
तुम्हारी इच्छाओं के होम के बदले...
अब कितने जतन....
कि तुम्हे तृप्ति मिल जाए.....
तुम्हारे जाने के बाद ये समझ आया हमें
कि तुम्हारी तृप्ति के सारे मार्ग
इस थाली ने तो छीने थे...।

- शिफाली पांडेय

दिल्ली में 'आतिशी' पारी शुरू, बनीं सीएम

- एलजी वीके सक्सेना ने दिलाई शपथ, दिल्ली की तीसरी महिला सीएम बनीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल के बाद अब आतिशी का राज शुरू हो गया है। आतिशी ने दिल्ली की सीएम पद की शपथ ले ली है।

दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने उन्हें आज राज निवास में सीएम पद की गोपनीयता की शपथ दिलाई है। आतिशी अरविंद केजरीवाल की सबसे करीबी नेता मानी जाती हैं, जिन्हें केजरीवाल ने भरोसे के साथ चुनाव से ठीक पहले अपनी सीएम की कुर्सी दी है। आतिशी की कैबिनेट में 5 मंत्री शामिल हैं, जिन्होंने आतिशी के साथ ही मंत्री पद की शपथ ली है।

भोपाल शहर को झुग्गी मुक्त करने की शीघ्र बने कार्य योजनाः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल को मेट्रोपोलिटन सिटी बनाने के लिए 25 वर्षों का करें प्लान तैयार

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भोपाल शहर को झुग्गी मुक्त करने के लिए समाधाननिकालने के हर संभव प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि पहले भवन तैयार करने का कार्य हो फिर झुग्गियों को खाली कराया जाये ताकि लोगों को परेशानी न हो। इस महती कार्य में जन-प्रतिनिधियों से भी समन्वय हो। झुग्गी मुक्त करने के लिए अक्टूबर तक निविदा पूरी कर कार्य शुरू किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सड़कों के स्वीकृत कार्य समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जो सड़कें अधूरी हैं, उन्हें जल्द पूरा करें। सड़कों की निविदा प्रक्रिया होने के बाद अवार्ड समय पर पारित हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास के समत्व भवन में भोपाल के विकास संबंधी कार्यों की समीक्षा कर अधिकारियों को निर्देश दिये।

उन्होंने भोपाल शहर को झुग्गी मुक्त करने की तैयारियों की जानकारी भी ली। कलेक्टर भोपाल ने विकास कार्यों संबंधी प्रेजेंटेशन दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल को मेट्रोपोलिटन सिटी बनाने के उद्देश्य से आगामी 25 वर्षों के प्लान को ध्यान में रखकर इंफ्रास्ट्रक्चर के कार्य पूरे किये जायें। भोपाल मेट्रोपोलिटन विकास प्राधिकरण के प्रस्तावित कार्यों के अंतर्गत रायसेन, मंडीदीप, सलामतपुर और सांची तक का क्षेत्र, राजगढ़ तथा पीलुखेड़ी क्षेत्र, बैरसिया तथा सूखी सेवनिया क्षेत्र के विकास के लिए कार्ययोजना बेहतर ढंग से तैयार की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल शहर सहित जिले के अन्य स्थानों पर फ्लाई-ओवर का निर्माण कार्य जल्द पूरा हो। भोपाल में बड़े तालाब का स्वरूप प्रभावित हुए बगैर एलिवेटेड कॉरिडोर का प्लान तैयार करें।

सरकारी भवनों में सोलर ऊर्जा से बिजली उत्पादन करें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकारी भवनों में सोलर ऊर्जा से बिजली उत्पादन करें। इस संबंध में अभियान चलाकर भोपाल को आदर्श बनायें। लोगों को प्रेरित किया जाएं, जिससे घरों की छतों पर सोलर पैनल अधिक संख्या में लग सकें। मेट्रो रेल परियोजना के कार्य चरणबद्ध ढंग से पूरे किये जायें। उन्होंने वंदे मेट्रो का प्लान भी तैयार करने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पुलिस विभाग की आवश्यकताओं के लिए समग्र प्लान बनायें। राजधानी को विकसित करने और ट्रैफिक का प्लान भी बेहतर रूप से बनाया जाये। हाउसिंग बोर्ड, भोपाल विकास प्राधिकरण और स्मार्ट सिटी द्वारा भोपाल के विकास के लिए 25 साल का प्लान तैयार किया जाये। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि उद्योगों और रोजगार के लिए प्रभावी कार्य हो और नीति निवेश के लिए अन्य राज्यों का अध्ययन भी किया जाये।

फारुक अब्दुल्ला ही जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद लाए

● अमित शाह बोले-तीन परिवारों ने घाटी में दहशतगर्दी फैलाई ● कहा-90 के दशक में यहां के आका पाकिस्तान से डरते थे

श्रीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शनिवार को जम्मू-कश्मीर के दौरे पर हैं। मेंढर में चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने कहा- 90 के दशक में फारुक की मेहरबानी से आतंकवाद आया। 90 के दशक में यहां बहुत गोलीबारी होती थी, क्योंकि यहां के आका पाकिस्तान से डरते थे। शाह ने कहा कि अब पाकिस्तान नरेंद्र मोदी से डरता है। इनकी हिम्मत नहीं है गोलीबारी करने की। अगर गोलीबारी की तो मोदी गोली का जवाब गोले से देंगे। ये चुनाव जम्मू-कश्मीर में तीन परिवारों का

शासन खत्म करने वाला चुनाव है। तीनों परिवार ने यहां जम्हूरियत और चुनावों को रोक कर रखा था। इन्होंने पूरे जम्मू-कश्मीर में 90 के दशक से 2014 तक दहशतगर्दी फैलाई। 40 हजार युवा मारे गए। अमित शाह मेंढर के बाद पूंछ, थानामंडी, राजौरी और अखनूर में भी कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे। शाह का 5 दिन में यह दूसरा दौरा है। इससे पहले 16 सितंबर को उन्होंने पाड्डर नागसेनी, किश्तवाड़

और रामबन में जनसभा की थी। 1947 के बाद से पाकिस्तान के खिलाफ लड़े गए हर जंग में जम्मू-कश्मीर के सैनिकों ने भारत की रक्षा की है। 1990 के दशक में जब आतंकवाद आया, तो यह मेरे पहाड़ी, गुर्जर और बकरवाल भाई ही थे, जिन्होंने सीमाओं पर बहादुरी से गोलियों का सामना किया। हम हर घर में एक महिला को 18 हजार का चैक सालाना देंगे। सीधा बैंक अकाउंट में ये चैक जाएगा। ईद और मुहर्रम के मौके पर 2 गैस के सिलेंडर मुफ्त दिए जाएंगे। किसानों को मिल रहे 6 हजार रुपए 10 हजार में बदलेंगे।

मुंबई की धारावी बस्ती में बीएमसी की टीम पर हमला

● मस्जिद का अवैध हिस्सा गिराने गई 2 गाड़ियों में तोड़-फोड़, ऐक्शन पर 8 दिन की रोक

मुंबई (एजेंसी)। बृहन्मनमुंबई नगर निगम (बीएमसी) के अधिकारियों की एक टीम शनिवार सुबह धारावी पहुंची। यहां महबूब-ए-सुभानी मस्जिद के अवैध हिस्से को गिराया जाना था। टीम सुबह 9 बजे धारावी की 90 फीट रोड पर पहुंची। खबर लगते ही मुस्लिम समाज समेत बस्ती के लोग इकट्ठा हो गए और टीम को रोक दिया। बाद में प्रदर्शनकारियों ने बीएमसी की दो गाड़ियों में तोड़-फोड़ कर दी। हालात संभालने के लिए बड़ी तादाद में पुलिस को तैनात किया गया है। प्रदर्शनकारियों को एक दल पुलिस और बीएमसी से चर्चा करने गया। इसके बाद बीएमसी ने आज डिमोलिशन

एक्शन को रोक दिया है। साथ ही मस्जिद कमेटी को 8 दिन का समय दिया है। हालांकि मुस्लिम पक्ष ने बीएमसी के खिलाफ कोर्ट जाने का फैसला किया है। मस्जिद पर एक्शन करने पहुंची बीएमसी की टीम ने एक बयान जारी किया है।

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3°c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 22 सितंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

दिल्ली से अयोध्या, सुगम होंगे रामलला के दर्शन!

● रेलवे दे रहा है बड़ी सुविधा, चलाएगा स्पेशल वंदे भारत ट्रेन, ऐलान ● दिल्ली से अयोध्या तक के लिए शुरू की कन्फर्म टिकट की सुविधा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कितने ही लोगों का ख्वाब होता है कि वो वंदे भारत जैसी शानदार ट्रेन में सफर करें और अयोध्या जाकर रामलला के दर्शन करें। रेलवे ने इस ख्वाब को हकीकत बनाने के लिए एक अनोखा कदम उठाया है। अब आप न सिर्फ वंदे भारत एक्सप्रेस में आरामदायक सफर का लुत्फ उठा सकते हैं, बल्कि अयोध्या के चर्चित धार्मिक स्थलों का दर्शन भी कर सकते हैं। और हां, इससे वेटिंग लिस्ट की झंझट भी नहीं है। रेलवे ने वंदे भारत एक्सप्रेस के जरिए

दिल्ली से अयोध्या तक कन्फर्म टिकट की सुविधा शुरू की है।

ये खास सर्विस सिर्फ हफ्ते में दो दिन, यानी शुक्रवार और शनिवार को ही मिलेगी। इस पैकेज का फायदा लेने के लिए आपको आईआरसीटीसी के 'रामलला दर्शन अयोध्या' टूर पैकेज के तहत रजिस्ट्रेशन कराना होगा। वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन नंबर 22426 दिल्ली के आनंद विहार टर्मिनल से सुबह 6.10 बजे रवाना होती है और दोपहर 1.30 बजे अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन पहुंचती है।

वापसी की ट्रेन नंबर 22425 अयोध्या कैंट से शाम 3.20 बजे चलती है और रात 11.40 बजे आनंद विहार टर्मिनल पहुंचती है। ट्रेन की रफ्तार और आरामदायक सफर ने इसे दिल्ली-अयोध्या रूट पर सफर करने वालों की पहली पसंद बना दिया है। आईआरसीटीसी का रामलला दर्शन अयोध्या टूर पैकेज अयोध्या के अहम धार्मिक स्थलों के दर्शन कराता है। इसमें रामलला मंदिर, सरयू घाट, हनुमानगढ़ी, और कनक भवन जैसी जगहें शामिल हैं। वंदे भारत के चेयर कार में सफर के साथ-साथ अयोध्या में एक रात होटल में ठहरने की सुविधा भी दी गई है। ये पैकेज खासतौर पर उन लोगों के लिए है जो आराम के साथ धार्मिक यात्रा करना चाहते हैं।

एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह होंगे नए वायुसेना चीफ

● 30 सितंबर को संभालेंगे कार्यभार वीआर चौधरी की लेंगे जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने नए एयर चीफ की नियुक्ति की घोषणा कर दी है। एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह 30 सितंबर को देश के नए एयर चीफ के रूप में कार्यभार संभालेंगे। गौरतलब है कि मौजूदा एयर चीफ वी आर चौधरी 30 सितंबर को ही रिटायर हो रहे हैं। एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह ने 1984 में वायुसेना में कमीशन प्राप्त किया था। वो कई अहम पदों को संभाल चुके हैं। वह वाइस एयर चीफ के अलावा सेंट्रल एयर कमांड के ऑफीसर कमांडिंग इन चीफ रह चुके हैं। सरकार ने नए एयर चीफ की नियुक्ति में वरिष्ठता का ध्यान रखा है। एयर मार्शल सिंह एक फाइटर पायलट हैं।

संक्षिप्त समाचार

यूपी के बाद सूरत में ट्रेन पलटाने की कोशिशें नाकाम

● अप लाइन ट्रैक पर रखी थीं फिश प्लेट और चाबियां

सूरत (एजेंसी)। देश में रेल हादसों की कोशिशों पर रोक नहीं लग पा रही है। कुछ असामाजिक तत्व और अपराधी लगातार ऐसी साजिशें कर रहे हैं, जिससे घटनाएं बढ़ रही हैं। ताजा मामला गुजरात के सूरत का है। शनिवार को सूरत के

किम रेलवे स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक से फिश प्लेट और चाबियां मिलीं। इसकी जानकारी से रेल महकमे में खलबली मच गई। जिन लोगों ने ऐसी हरकत की है, उनका इरादा ट्रेन को पटरी से उतारने का था, लेकिन रेल अधिकारियों की सतर्कता से यह प्रयास विफल हो गया। पश्चिमी रेलवे के वडोदरा डिवीजन ने बताया कि अज्ञात बदमाशों ने अप लाइन से फिश प्लेट और चाबियां खोलकर ट्रैक पर रख दीं।

देश का राजा ऐसा हो जो आलोचना झेल सके

नितिन गड़करी बोले-

● उस पर आत्मचिंतन करें, यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी परीक्षा

पुणे (एजेंसी)। केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि राजा (शासक) को ऐसा होना चाहिए कि कोई उसके खिलाफ बात करे, तो उसे बर्दाश्त करे। आलोचनाओं का आत्मचिंतन करे। यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी परीक्षा होती है। गडकरी ने ये बातें पुणे में शुक्रवार को वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी में पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में कही। गडकरी ने कहा कि साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और कवियों को अपने विचार खुलकर और दृढ़ता से व्यक्त करने चाहिए।

सरकारों को मंदिरों का नियंत्रण हिंदू समाज को सौंप देना चाहिए

● तिरुपति लड्डू विवाद पर अब वीएचपी भी कूदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने शुक्रवार को कहा कि तिरुपति मंदिर के लड्डू में पशुओं की चर्बी का कथित इस्तेमाल असहनीय है और यह मांग की कि

आंध्र प्रदेश सरकार मंदिर का नियंत्रण व प्रबंधन हिंदू समाज को सौंप दे। विहिप के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री बजरंग बागड़ा ने देश भर में सभी मंदिरों और हिंदुओं के अन्य देवालयों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की भी मांग की। उन्होंने तिरुपति के प्रसाद को अपवित्र करने में कथित तौर पर शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह होंगे वायुसेना के नए चीफ

वीआर चौधरी की लेंगे जगह, 30 को संभालेंगे कार्यभार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने नए एयर चीफ की नियुक्ति की घोषणा कर दी है। एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह 30 सितंबर को देश के नए एयर चीफ के रूप में कार्यभार संभालेंगे। गौरतलब है कि मौजूदा एयर चीफ वी आर चौधरी 30 सितंबर को ही रिटायर हो रहे हैं। एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह ने 1984 में वायुसेना में कमीशन प्राप्त किया था। वो कई अहम पदों को संभाल चुके हैं। वह वाइस एयर चीफ के अलावा सेंट्रल एयर कमांड के ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ रह चुके हैं। सरकार ने नए एयर चीफ की नियुक्ति में वरिष्ठता का ध्यान रखा है। एयर मार्शल सिंह एक फाइटर पायलट हैं। पिछले साल फरवरी में वाइस एयर चीफ बनने से पहले सिंह कई अहम जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। एयर मार्शल सिंह के पास अनेक तरह के लड़ाकू विमान और हेलीकॉप्टर उड़ाने का अनुभव है।

गलत हुआ उसके साथ, गांव की लड़कियां उसके जैसा बनना चाहती हैं

● विनेश फोगाट को मिल रहा महिलाओं का साथ, बड़ी मात्रा में प्रचार में जुट रहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव और रोचक हो गया है। ओलंपिक खिलाड़ी विनेश फोगाट कांग्रेस के टिकट पर जुलाना विधानसभा से चुनाव लड़ रही हैं। उनकी सभाओं में भीड़ भी आ रही है। कड़ी धूप में भी लोग उन्हें सुनने के लिए आ रहे हैं। रामकली गांव में विनेश फोगाट चुनाव प्रचार के लिए पहुंची थी और हजार से अधिक लोग पहुंच गए। रामकली गांव के सरपंच रामतीरथ सिंह ने 50 किलो देसी घी के लड्डू का आर्डर दिया है। उन्होंने बात करते हुए कहा कि हम विनेश फोगाट के वजन के बराबर गांव में लड्डू बंटवाएंगे। राम तीरथ सिंह को लगता है कि पेरिस में विनेश का साथ भारत सरकार ने नहीं दिया। उन्होंने कहा कि भाई साहब सरकार ने साथ नहीं दिया, उन्हें साथ देना चाहिए था।

24 घंटे बंद रहने के बाद खुला झारखंड और बंगाल बॉर्डर

● गवर्नर की सीएम ममता को हिदायत-अपना फर्ज निभाएं, बाढ़ के लिए किसी को दोष न दें

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल-झारखंड बॉर्डर करीब 24 घंटे बंद रहने के बाद अंतरराज्यीय व्यापार के लिए ट्रकों की आवाजाही के लिए फिर से खोल दी गई है। 19 सितंबर को ममता ने दामोदर घाटी निगम पर बाढ़ के आरोप लगाने के बाद इसे 3 दिन तक बंद करने का आदेश दिया था। जिसके कारण एनएच-2 और एनएच-6 पर ट्रकों की 20 से 25 किमी लंबी लाइन लग गई थी। ममता के आदेश के बाद राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने स्पष्टीकरण मांगा था। इससे पहले बोस ने सीएम ममता को लेटर लिखकर सलाह दी थी कि वे अपनी ड्यूटी करें, डीवीसी को बाढ़ के लिए दोषी न ठहराएं।

ग्वालियर भारत-बांग्लादेश मैच के टिकट्स 6 घंटे में खत्म

ईस्ट और वेस्ट गैलरी के 15500 टिकट डेढ़ घंटे में ही बिके

भोपाल। ग्वालियर में 6 अक्टूबर को भारत-बांग्लादेश के बीच होने जा रहे टी-20 इंटरनेशनल मैच के लिए ऑनलाइन टिकट्स 6 घंटे में ही बिक गए। मैच के लिए ऑनलाइन टिकट बुकिंग शुक्रवार (20 सितंबर) को सुबह 10 बजे शुरू हुई थी। मैच के 22400 टिकट शाम 4 बजे तक रिजर्व हो गए। दर्शकों की सबसे पसंदीदा गैलरी ईस्ट और वेस्ट गैलरी रही, जिसके 15500 टिकट सिर्फ डेढ़ घंटे में ही बिक गए। ईस्ट और वेस्ट गैलरी के टिकट से [illegible] (मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन) ने 1 करोड़ 39 लाख 50 हजार रुपए की कमाई की। मैच की लगभग 6 हजार टिकट एमपीसीए, जीडीसीए सहित वीआईपी के लिए आरक्षित रहेंगी। [illegible] व [illegible] टिकट की कालाबाजारी पर नजर रखे हुए है। ग्वालियर में 14 साल बाद इंटरनेशनल क्रिकेट मैच हो रहा है। यही कारण है कि क्रिकेट प्रेमियों का उत्साह चरम पर है। ग्वालियर में 6 अक्टूबर को भारत-बांग्लादेश के बीच होने वाला मैच शंकरपुरम स्थित श्रीमंत माधवराव सिंधिया इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाना है। शंकरपुर स्टेडियम की कुल दर्शक क्षमता 30 हजार है। इसमें सामान्य टिकट के लिए सुबह 10 बजे से टिकटों की ऑनलाइन बुकिंग शुरू हुई। शाम 4 बजे तक सभी 22400 टिकट बिक गए। वहीं 1500 विद्यार्थियों और 100 दिव्यांगों के टिकट पहले ही बुक हो चुके हैं। यदि अब बात करें कि आम आदमी टिकट खरीद पाएगा तो इसका जवाब ना होगा। क्योंकि ओपन टिकट बिक चुके हैं। अब 6 हजार के लगभग टिकट बचाकर रखे गए हैं, जो एमपीसीए, जीडीसीए व अन्य वीआईपी के लिए रहेंगे। टिकट वितरण के दौरान वेबसाइट 222.[illegible] पर एक व्यक्ति को एक आईडी पर कम से कम एक और अधिकतम चार टिकट की पात्रता थी। कई लोगों ने परिवार के अन्य सदस्यों के नाम से काफी संख्या में टिकट निकाले हैं। कुछ दिन पहले केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी जब बैठक ली थी तो एमपीसीए के अधिकारियों को कालाबाजारी पर रोक लगाने के लिए कहा था। स्टेडियम के ईस्ट व वेस्ट गैलरी में दर्शकों के लिए 15,500 टिकट थे। कुल टिकट 1 करोड़ 39 लाख 50 हजार रुपए में बिके। वहीं नॉर्थ व ईस्ट गैलरी और नॉर्थ व वेस्ट गैलरी में 4 हजार सीटें और साउथ पवेलियन लेवल-4 रेगुलर व लेवल-4 प्रीमियम में 4800 सीटों के लिए दर्शकों ने टिकट खरीदें हैं। कुल मिलाकर 22400 सीट अभी तक बुक हो चुकी हैं। इसके अलावा 1500 स्टूडेंट व 100 दिव्यांग टिकट भी बिक चुके हैं। अंतराष्ट्रीय टी-20 मैच से पहले पिच और मैदान का आकलन करने के लिए 21 सितंबर को ग्वालियर और चंबल डिवीजन की टीमों के बीच दो अभ्यास मुकाबले खेलना निर्धारित थे। जो फिलहाल टाल दिया गया है। बताया जा रहा है कि बारिश से मैदान के शुरुआती छोर में अधिक नमी है। एक-दो दिन में नमी हटते ही मैच कराकर पिच व मैदान का टेस्ट किया जाएगा। जीडीसीए के अनुसार दोनों टीमों के खिलाड़ी दो अक्टूबर को ग्वालियर आ जाएंगे और वे अगले दिन से स्टेडियम में अभ्यास करने पहुंचेंगे। इस दौरान दर्शक पूरी तरह प्रतिबंधित रहेंगे। साथ ही मैच के दिन दर्शकों को स्टेडियम में चार बजे के बाद से प्रवेश दिया जाएगा।

अब बनेगा सबसे बड़ा चीता संरक्षण परिक्षेत्र

तीन राज्यों के 17 जिलों को मिलाकर बनाने की तैयारी

● एनटीसीए की रिपोर्ट में खुलासा, मिलेगा सुरक्षित आवास

भोपाल। भारत में चीतों को रिलोकेट करने को 17 सितंबर को दो साल पूरे हो गए। सात दशक बाद देश की धरती पर फिर से चीते दौड़ रहे हैं। अब चीता संरक्षण प्रोजेक्ट में एक बड़ा कदम उठाया जा रहा है। देश के तीन राज्यों मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क से लेकर राजस्थान और उत्तर प्रदेश के जंगलों को शामिल कर सबसे बड़ा चीता संरक्षण क्षेत्र तैयार करने की योजना बनाई जा रही है। इसका जिक्र नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी (एनटीसीए) ने चीता प्रोजेक्ट के दो साल पूरे होने पर अपनी वार्षिक प्रगति रिपोर्ट में किया है। एनटीसीए की रिपोर्ट के अनुसार चीता संरक्षण क्षेत्र की सीमा मध्य प्रदेश के श्योपुर स्थित कूनो नेशनल पार्क से शुरू होगी। जो राजस्थान के मुकुंदरा टाइगर रिजर्व और मध्य प्रदेश के मंदसौर के गांधी सागर सेंचुरी तक जाएगी। मंदसौर के गांधी सागर में अब चीतों को लाने की तैयारी चल ही रही है। वहीं, उत्तर प्रदेश के भी कुछ भाग को शामिल किया जाएगा। यह भारत का सबसे बड़ा चीता संरक्षण परिक्षेत्र बनेगा। अभी इस क्षेत्र का सटीक आकार और क्षेत्रफल तय नहीं है। हालांकि इस पर पांच साल के अंदर तैयार करने की योजना है। इसमें कूनो से गांधी सागर के बीच चीता कॉरिडोर का निर्माण होगा। इस कॉरिडोर का उद्देश्य चीतों के संरक्षण को बेहतर बनाना और उनके लिए एक सुरक्षित वातावरण तैयार करना है। साथ ही रिपोर्ट में जल्द ही चीतों को खुले जंगल में छोड़ने की भी योजना है। अभी चीतों को बड़े बाड़े में रखा गया है। कूनो में चीतों को एक से डेढ़ वर्ग किलोमीटर के सीमित क्षेत्र में रखा गया है, जबकि एक चीते को सामान्य रूप से 50 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र की आवश्यकता होती है। नए चीता कॉरिडोर और संरक्षण क्षेत्र के निर्माण से चीतों को एक बड़ा और सुरक्षित आवास मिलेगा। नए चीता संरक्षण क्षेत्र में तीन राज्यों के 17 जिलों के जंगल शामिल होंगे।

अमेरिका में भारतीय दूतावास के अधिकारी का मिला शव

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास के एक अधिकारी का शव मिला है। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट में बताया गया है कि अधिकारी का शव भारतीय मिशन के परिसर में ही बरामद हुआ है। भारतीय दूतावास ने शुक्रवार को बताया कि 18 सितंबर की शाम एक भारतीय अधिकारी की मौत हो गई है। एजेंसियां परिवार के सदस्यों के साथ संपर्क में है। अधिकारी के शव को जल्द से जल्द भारत वापस भेजा जाएगा। स्थानीय पुलिस और सीक्रेट सर्विस घटना की जांच कर रही हैं। पुलिस ने जांच में आत्महत्या के एंगल को भी शामिल किया है।

हरियाणा में 'खेला' करने की तैयारी में जुटी बीजेपी!

मनोहर लाल खट्टर ने कुमारी शैलजा को दिया बड़ा ऑफर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा में जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव की तारीख नजदीक आ रही है, सियासत गर्म हो रही है। अब बीजेपी ने कांग्रेस पार्टी की वरिष्ठ नेता कुमारी शैलजा को बड़ा ऑफर दिया है।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने एक सभा में कहा कि कुमारी शैलजा का कांग्रेस में अपमान हुआ है और हम उन्हें अपने साथ लेने के लिए तैयार है। मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि कुमारी शैलजा को गालियां तक दी गई और वह घर बैठी हुई है।

मनोहर लाल खट्टर ने इसके लिए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपिंदर सिंह हुड्डा को जिम्मेदार ठहराया है।

'हम 40 साल से काबिज, कुछ भी हो जाए, जगह नहीं छोड़ेंगे

आगजनी के तीन बाद भी नवादा के कृष्णानगर गांव में तनाव बरकरार

पटना (एजेंसी)। तीन दिन पहले बिहार के नवादा जिले में हुई आगजनी और हिंसा के बाद अब हालात सामान्य हो रहे हैं और घटना की परतें खुल रही हैं। गांव के मिथिलेश मांझी की झोपड़ी में बुझे हुए मिट्टी के चूल्हे पर रखे रोटी के टुकड़े यह बताते हैं कि बुधवार शाम को जब कृष्णा नगर गांव में लोगों के एक समूह ने 34 घरों में आग लगाई, तो परिवार को कितनी तेजी से भागना पड़ा। इस घटना में मांझी समुदाय के 25 परिवार और रविदास समुदाय के 9 परिवार (दोनों अनुसूचित जाति के) के घर पूरी तरह या आंशिक रूप से नष्ट हो गए हैं। पुलिस ने मामले में नंदू पासवान समेत 15

लोगों को गिरफ्तार किया है। नवादा प्रशासन ने बताया कि यह घटना 16 एकड़ के एक टाइटल सूट का परिणाम थी, जो पासवान और अन्य लोगों ने उन पर कब्जा करने वाले लोगों के खिलाफ दायर की थी, जिन्होंने उस जमीन को खरीदने का दावा किया है। बुधवार की घटना के कारणों का तुरंत पता नहीं चल सका।

पीड़ितों ने जताई उम्मीद, सरकार हमारे लिए पक्के मकान बनाएगी

उन्होंने कहा कि आगजनी जाति विवाद नहीं, बल्कि भूमि विवाद का परिणाम थी। सुरजू ने बताया, पासवानों और मांझी/रविदास के बीच कभी कोई संघर्ष नहीं हुआ। भूमि सर्वेक्षण के चलते, नंदू पासवान और अन्य लोगों ने हमें डराने के लिए हमारे घरों में आग लगाई। एक अन्य निवासी वैष्णवी मांझी ने कहा कि वह वर्षों से वहां रह रही थी और राज्य सरकार भी हमें मान्यता देती है, और हमारे पास इस पते पर वोटर कार्ड हैं। वैष्णवी की झोपड़ी भी उन जली हुई झोपड़ियों में से एक थी, और उसने आशा व्यक्त की कि सरकार हमारे लिए पक्के मकान बनाएगी। घटना के बाद सभी विस्थापित परिवार एक सरकारी शिविर में रह रहे हैं। सरकार के अलावा, कुछ स्वयंसेवी समूह भी प्रभावित परिवारों को भोजन मुहैया करा रहे हैं। सरकार उन परिवारों को एक-एक लाख रुपये का मुआवजा दे रही है, जिनके घर जलाए गए थे। जिन 34 घरों में आग लगी, उनमें से 21 घर पूरी तरह जल गए और 13 आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गए। ये घर ईंट से बने थे, जिनमें से कुछ की छतें फूस की थीं और अन्य की छतें एस्बेस्टस से बनी थीं। स्थानीय निवासियों के अनुसार, मांझी परिवार इस क्षेत्र को गैर मजरूआ भूमि मानते हुए करीब 40 वर्षों से यहां खेती कर रहे हैं। हालांकि, नंदू पासवान और लगभग एक दर्जन अन्य लोग दावा करते हैं कि उन्होंने इस भूमि में से 16 एकड़ जमीन खरीदी है। 20 मांझी और रविदास परिवारों के खिलाफ टाइटल सूट दायर किया था।

कौन बनेगा डीएवीवी का नया कुलगुरु, दर्जनभर दावेदारों ने आजमाई किस्मत

कुलगुरु डॉ. रेणु जैन का कार्यकाल 27 सितंबर को खत्म होगा

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलगुरु डॉ. रेणु जैन का कार्यकाल अगले सप्ताह 27 सितंबर को खत्म हो रहा है। इससे पूर्व राजभवन ने नए कुलगुरु का चयन करने की तैयारी कर ली है। शुक्रवार को चयन समिति ने साक्षात्कार की प्रक्रिया पूरी की, जहां दर्जनभर दावेदारों ने अपनी-अपनी किस्मत अजमाई है।समिति ने दावेदारों को अपने मापदंड पर परखकर नाम लिफाफे में बंद कर दिए हैं। अब सप्ताहभर के भीतर राज्यपाल मंगुभाई पटेल को नाम तय करना है। खास बात यह है कि साक्षात्कार की प्रक्रिया में इंदौर से चार उम्मीदवार शामिल हुए। कुलगुरु को लेकर मार्च में राजभवन ने विज्ञापन निकाला था।

250 से ज्यादा बायोडाटा आए थे

इसके तहत महीनेभर में 250 से ज्यादा बायोडाटा आए। इनमें इंदौर से 25 शिक्षाविद शामिल थे। चयन समिति बनने के बाद आवेदनों की स्क्रूटनी हुई। अधिकांश आवेदकों ने दस साल तक प्रोफेसर पद पर कार्य करने का अनुभव गलत ढंग से बताया था। निजी कॉलेजों में कोड-28 में नियुक्ति को अनुभव में जोड़ा गया।जबकि कई आवेदन समिति ने अधूरे दस्तावेज होने के चलते खारिज किए हैं। सितंबर में दर्जनभर को शार्टलिस्ट किया गया। फिर उम्मीदवारों को ई-मेल के माध्यम से 20 सितंबर को साक्षात्कार के बारे में बताया।

डॉ. आशुतोष मिश्रा

पूर्व प्रभारी कुलगुरु डॉ. आशुतोष मिश्रा वर्तमान में गणित अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष हैं। बरसों से इन्होंने भौतिक अध्ययनशाला की कमान संभाली है। वरिष्ठ प्राध्यापक होने के कारण वे प्रवेश समिति के अध्यक्ष भी हैं। इनकी खासियत यह है कि विश्वविद्यालय में प्राध्यापक-अधिकारी से लेकर कर्मचारी और छात्र संगठन व नेताओं से बेहतर तालमेल है।

डॉ. सचिन शर्मा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में प्रदेशाध्यक्ष रह चुके डॉ. सचिन शर्मा इन दिनों आइएमएस में पढ़ा रहे हैं। छह महीने पहले इनकी नियुक्ति हुई है, जो काफी चर्चाओं में रही है। इन्होंने निजी संस्थानों में सेवाएं दी है। छात्र नेताओं से तालमेल बना कर चलते हैं।

डॉ. कन्हैया आहूजा

डॉ. कन्हैया आहूजा वर्तमान में अर्थशास्त्र अध्ययनशाला की कमान संभाल रहे हैं। वे नीति आयोग में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। 2020 में विश्वविद्यालय में सीयूईटी से जोड़ा गया है। इन्होंने बीते चार साल से सीयूईटी समन्वयक की भूमिका निभाई है। इनके नेतृत्व में काउंसिलिंग का सफल आयोजन हुआ है। विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों से अच्छे तालमेल बना रखा है।

डॉ. राजीव दीक्षित

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में डीसीडीसी की जिम्मेदारी संभाल रहे डॉ. राजीव दीक्षित प्रतिनियुक्ति पर आए हैं। लगभग दो साल पूरे हो चुके हैं। इसके पहले वह छात्र कल्याण संघ के अध्यक्ष भी रहे हैं। वे विज्ञान भारती से भी जुड़े हैं।

किराए पर ली थार, फॉर्च्यूनर सहित कई लग्जरी कार, मालिक के नाम का फर्जी आधार बनाकर बेच दी

इंदौर। इंदौर की लसूड़िया पुलिस ने ऐसे जालसाजों को पकड़ा है, जो रेंटल कार कंपनियों से कारें किराये पर लेकर गायब कर रहे थे। दो आरोपितों से दो करोड़ रुपये कीमत की सात लग्जरी कारें जब्त कर ली हैं। दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। मास्टर माइंड एक ऑटो डील संचालक है, जो अभी तक फरार है। पुलिस ने 18 मई को %गो विथ कार% कंपनी के संचालक रोहित नागराज यदुवंशी (पंचवटी कॉलोनी) की शिकायत पर केस दर्ज किया था। रोहित ने इटारसी निवासी प्रतीक चौधरी को कार (थार एवं स्विफ्ट) किराये पर दी थीं। प्रतीक ने दोनों गाड़ियां बेच दीं। वहीं बागेश्वर कार रेंटल कंपनी के संचालक प्रीतम कुशवाह और आयुष अग्रवाल ने भी फॉर्च्यूनर, बलेनो, एंडेवर, ग्लांजा, थार जैसी कारों की हेराफेरी की शिकायत दर्ज करवाई।

पुलिस ने अलग-अलग जगहों से बरामद की कीमती कारें

पुलिस ने छिंदवाड़ा, नर्मदापुरम में दबिश देकर प्रतीक चौधरी निवासी इटारसी (नर्मदापुरम) व जितेंद्र उर्फ जीतू भावसार निवासी परासिया (छिंदवाड़ा) को पकड़ लिया। छिंदवाड़ा, नागपुर, जबलपुर से लाखों रुपये कीमत की कारें बरामद कर ली हैं।

विभाग की वेबसाइट से निकालते थे जानकारी- टीआई तारेश सोनी के मुताबिक आरोपित परिवहन विभाग की वेबसाइट से वाहन मालिक की जानकारी निकालकर जाली रजिस्ट्रेशन और पेन व आधार कार्ड बना लेते थे। इन दस्तावेजों के जरिए गाड़ियों को बेच देते थे। कुछ गाड़ियों को न बिकने पर गिरवी रखा था।

उज्जैन पहुंची तिरुपति प्रसाद की आंच, कांग्रेस नेता ने की बाबा महाकाल के लड्डू की जांच की मांग

इंदौर। आंध्र प्रदेश के फेमस तिरुपति मंदिर के लड्डू प्रसादम का विवाद लगातार तूल पकड़ता जा रहा है. मंदिर के लड्डू में इस्तेमाल होने वाली घी को लेकर अब कई तरह के सवाल उठ रहे हैं. तिरुपति लड्डू विवाद की आंच अब मध्य प्रदेश तक पहुंची गई है. प्रदेश के सीनियर कांग्रेस नेता ने अब उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर के प्रसाद की जांच की मांग की है।

बता दें कि कांग्रेस के पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने महाकाल के प्रसाद के लड्डुओं की भी जांच कराए जाने की मांग की है. इतना ही नहीं उन्होंने बीजेपी पर जमकर निशाना भी साधा. कांग्रेस के पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने कहा कि इस पूरे मामले में नायडू सरकार दोषी है, जिसने इस तरीके का टेंडर निकाला है. इसमें 350 रुपये में घी खरीदने की बात कही गई है।

आखिर 350 रुपये में कैसे शुद्ध घी मिलेगा. शुद्ध घी की कीमत बाजार में एक हजार रुपये से लेकर 1200 रुपये तक है. अगर बीजेपी के नेता इस पूरे घटनाक्रम को लेकर जगन मोहन रेड्डी को दोषी बता रहे हैं, तो वे यह ना भूले कि जगन मोहन रेड्डी का भी केंद्र सरकार और नेता समर्थन करते थे।

ग्रुप में भेजी 'पीएम सम्मान निधि' योजना की लिंक, खातों से निकल गई राशि

इंदौर। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के नाम पर कुछ लोगों से ठगी हो गई। सामाजिक ग्रुप पर सरकारी योजना के नाम पर ऐप की लिंक भेजी गई। लोगों ने ऐप डाउनलोड कर लिया, जिसके बाद उनके अकाउंट से राशि निकल गई। ट्रांसपोर्ट कारोबारी के खाते से 25 हजार तो अन्य के खातों से भी राशि निकल गई। बाद में पता चला कि सरकारी योजना के नाम से फर्जी ऐप की लिंक दी गई थी, जिसके डाउनलोड करने से धोखेबाज को बैंक अकाउंट ऑपरेट करने की अनुमति मिल गई थी।ट्रांसपोर्ट कारोबारी ने मामले में साइबर सेल में शिकायत की, जिसके बाद राशि वापस कराने की प्रक्रिया शुरू करने के साथ धोखेबाजों की तलाश भी शुरू की गई। ट्रांसपोर्टर ने पुलिस को बताया, वे सामाजिक संगठन के वाट्सऐप ग्रुप से जुड़े हैं।

ग्रुप पर किसी ने पीएम किसान सम्मान निधि हासिल करने को लेकर एक ऐप की लिंक शेयर की। चूंकि कई लोग खेती करते हैं तो उन्होंने विश्वास कर उस एपीके लिंक पर भरोसा कर डाउनलोड कर लिया। कुछ समय बाद खाते से राशि निकलने के मैसेज आए तो सभी अलर्ट हुए। अधिकांश के खातों से पहली बार में 5 हजार, 10 हजार व 25 हजार रुपए निकाले गए। राशि निकलते ही संबंधित लोगों ने बैंक से संपर्क कर खातों को ब्लॉक करा दिया अन्यथा और राशि निकल सकती थी। ट्रांसपोर्टर के 25 हजार गए थे तो सबसे पहले उन्होंने क्राइम ब्रांच की हेल्पलाइन पर संपर्क कर शिकायत कर दी। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक, साइबर सेल शिकायत की जांच कर रही है।

सावधान रहें-असली ऐप की तरह दिखते हैं नकली ऐप, मोबाइल से डेटा होता है चोरी

साइबर एक्सपर्ट रोहित पंवार के मुताबिक, धोखेबाज असली ऐप से मिलते जुलते ऐप बनाकर जारी करते हैं, जिसके झांसे में लोग आ जाते हैं। कई सरकारी योजनाओं के ऐप को लेकर इस तरह से ठगी हो रही है। यदि कोई व्यक्ति ऐप इंस्टॉल करता है और आवश्यक अनुमतियां दे देता है तो ऐप धोखेबाजों को जानकारी भेजना शुरू कर देता है। इसके बाद धोखेबाजों के पास पीड़ित के मोबाइल की सारी जानकारी पहुंच जाती है और वे वित्तीय धोखाधड़ी आसानी से कर सकते हैं। ऐसे ऐप्स में अक्सर मैलवेयर या वायरस होते हैं, जो आपके फोन की सुरक्षा को भेद देते हैं।

इंदौर निवासियों के लिए अच्छी खबर: जोन कार्यालयों पर होने लगेगा जन्म-मृत्यु पंजीयन, कतार से मिलेगी मुक्ति

इंदौर। बहुत जल्दी जन्म-मृत्यु पंजीयन जोन कार्यालयों पर भी होने लगेगा। फिलहाल यह सुविधा सिर्फ नगर निगम मुख्यालय पर ही उपलब्ध है। इस वजह से पंजीयन करवाने के लिए आने वालों की भीड़ लगी रहती है। मुख्यालय पर भी सिर्फ एक ही आइडी है। यानी पूरे शहर में होने वाले जन्म और मृत्यु के पंजीयन एक ही कंप्यूटर के भरोसे है।उन्होंने विभाग प्रमुख से प्राप्त आवेदनों, जारी किए जाने वाले प्रमाण पत्रों, लंबित आवेदनों की विस्तार से जानकारी ली। महापौर ने कार्यालय के कर्मचारियों के साथ-साथ आवेदनों के संबंध में वहां आए नागरिकों से भी चर्चा की।विभाग प्रमुख ने महापौर को बताया कि भारत सरकार के पोर्टल के माध्यम से जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र संबंधित कार्रवाई की जाती है। यह पोर्टल दिन में कई बार बंद हो जाता है और बहुत धीमा चलता है।पोर्टल पर इंट्री और कार्रवाई के लिए निगम में सिर्फ एक ही आइडी उपलब्ध है। इस वजह से प्रमाण-पत्र जारी करने में समय लगता है। इससे नागरिकों को परेशानी होती है।इस पर महापौर ने तुरंत भोपाल और दिल्ली के अधिकारियों से चर्चा कर एक ही आइडी के स्थान पर निगम के सभी जोनल कार्यालयों को भी आइडी उपलब्ध कराने के लिए कहा गया।महापौर ने पंजीयन कार्यालय के रिकार्ड रूम का अवलोकन भी किया। उन्होंने रिकार्ड का एआइ तकनीक से डिजिटाईलेशन कर सहेजने के निर्देश दिए।

इंस्टा पर अंतिम संस्कार की रील देख इंदौर पहुंचा बेटा

कर्नाटक से ज्योतिर्लिंग दर्शन करने निकली थी मां; उज्जैन में हादसे का शिकार हुई

इंदौर। दो साल पहले कर्नाटक के हुबली से उज्जैन के महाकालेश्वर दर्शन के लिए निकली 67 वर्षीय बुजुर्ग महिला उज्जैन में एक हादसे की शिकार हो गई। गंभीर हालत में उसे इंदौर रेफर किया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। जब चार दिन तक उसकी शिनाख्त नहीं हुई तो इंदौर पुलिस ने अज्ञात में उसका अंतिम संस्कार करा दिया। दाह संस्कार करने वाली सामाजिक संस्था ने उसके और अंतिम संस्कार के फोटो-वीडियो बनाकर इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर दिए। दो साल बाद बेटे ने मां का फोटो-वीडियो देखा तो इंदौर संपर्क किया। पता चला कि अस्थियां विसर्जित की जा चुकी थीं। बेटा श्राद्ध पक्ष में मां की निशानी लेने इंदौर आया लेकिन कुछ नहीं मिला। मां को मोक्ष मिले इस सोच के साथ उसने अन्य लावारिस वृद्धा की अस्थियों

का पूजन किया। फिर सांकेतिक तौर पर दो अस्थियां (कलश) लेकर कर्नाटक रवाना हो गया। दो दिन बाद वह वहां मां का श्राद्ध के साथ तर्पण करेगा।

लावारिस मानकर कर दिया था अंतिम संस्कार

मामला 4 दिसंबर 2022 का है। उज्जैन के पास बुजुर्ग महिला दुर्घटना में घायल हो गई थी। उसे एम्बुलेंस से एमवाय अस्पताल लाया गया था। 7 दिसंबर 2022 को उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। इस बीच उज्जैन और इंदौर पुलिस ने उसकी शिनाख्त के प्रयास किए। 11 दिसंबर को इंदौर पुलिस ने शिनाख्त नहीं होने पर लावारिस मानकर महाकाल संस्था और सुल्ताने इंदौर संस्था के माध्यम से उसका अंतिम संस्कार करवा दिया।संस्था ने उसके फोटो और अंतिम संस्कार के वीडियो इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर दिए। फिर 2023 में श्राद्ध पक्ष में जूनी इंदौर मुक्तिधाम में रखी 200 से ज्यादा लावारिस अस्थियों का हरिद्वार में विधि विधान के साथ विसर्जन कर दिया गया। इसमें इस वृद्धा की अस्थियां भी थीं। इंदौर पुलिस और महाकाल संस्था ने बेटे को बताया कि उसकी मां को 4 दिसंबर को उज्जैन के सरकारी अस्पताल से इंदौर रेफर किया गया था।

इंदौर में 5वीं मंजिल से कूदा 11वीं का स्टूडेंट

सुसाइड नोट में लिखा- मौत एक सच्चाई है, जिसे हम सभी को स्वीकारना होगा

इंदौर। इंदौर के एबी रोड स्थित प्रेस कॉम्प्लेक्स की एक बिल्डिंग से 11वीं के स्टूडेंट ने छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। छात्र विनायक मिश्रा सुबह योगा करने छत पर गया था। करीब 7 बजे 5वीं मंजिल से तरीके से कूद गया। पुलिस को उसके रूम से सुसाइड नोट मिला है, जिसमें कई बार सॉरी लिखा है। एमआईजी पुलिस मामले की जांच कर रही है। छात्र किस बात से परेशान था इसका खुलासा नहीं हुआ है। अंग्रेजी में लिखे सुसाइड नोट में उसने लिखा कि ईश्वर के लिए आप सभी मुझे माफ कर दीजिए। मौत एक सच्चाई है, जिसे हम सभी को स्वीकारना होगा और आगे भी बढ़ना होगा। सभी का जीवन उज्ज्वल हो, सेहत ही संपत्ति है। मैं सामान्य बच्चा नहीं हूं। आई एम कमिंग सूनज बताया गया कि छात्र डिप्रेशन में था और अपने रूममेट्स से बार-बार कह रहा था कि गणेशजी चले गए, वो भी चला जाएगा।

प्राइवेट हॉस्टल में रहता था- एमआईजी पुलिस के अनुसार घटना सुबह करीब 7 बजे की है। छात्र विनायक पिता विनोद मिश्रा मूल रूप से मैहर (सतना) का रहने वाला था। स्वदेश भवन के चौथे माले स्थित नीलगिरी प्राइवेट हॉस्टल में रहता था। यहां वह बर्फानी एकेडमी में 11वीं कक्षा में पढ़ाई करता था।रोज की तरह वो शनिवार सुबह योगा करने के लिए होस्टल की छत पर गया। कुछ देर बाद नीचे तैनात गार्ड को कुछ गिरने की आवाज आई। देखा तो विनायक खून से लथपथ पड़ा था। उसने कुछ देर बाद दम तोड़ दिया।घटना की जानकारी लगते ही पुलिस टीम भी मौके पर पहुंची। बहन सिमरन और परिचित उसे अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। बताया जाता है कि बहन हॉस्टल के नीचे वाले फ्लोर पर रहती है।

इंदौर में अलग-अलग घरों को बदमाशों ने बनाया निशाना:ताला-तोड़ सोने-चांदी के जेवर सहित रुपए पर हाथ साफ किया,केस दर्ज

इंदौर। इंदौर में चोरों के हौसले बुलंद है। लसूड़िया थाना क्षेत्र के अलग-अलग घरों को निशाना बनाते हुए बदमाश सोने-चांदी के जेवर सहित नकदी चुरा ले गए। पुलिस ने शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज किया है। लसूड़िया थाना पुलिस के अनुसार अज्ञात बदमाश विक्रम सिंह निवासी श्रीनाथ गोल्ड के घर का ताला तोड़कर सोने-चांदी के जेवर सहित नकदी चुरा ले गए। घर वाले बाहर गए हुए थे। चोरी की सूचना पड़ोसी ने दी। मामले में सीसीटीवी फुटेज खंगाल पुलिस आरोपियों का पता लगाने में जुटी है।इसी तरह लसूड़िया थाना पुलिस के अनुसार फरियादी सोनिया राज सूद उम्र 66 साल के हरेकृष्ण विहार स्थित घर में बदमाश घुसे। घर का ताला तोड़कर बदमाश एक टीवी, एक आरओ, दो कुर्सियां, पेंटिंग्स, तीन गोल्डन लेम्प सेट्स और अन्य घरेलू इस्तेमाल का सामान चुरा ले गए।

1 लाख रुपए चुरा ले गए- सराफा थाना पुलिस के अनुसार फरियादी हैदर अली उम्र 47 साल निवासी राममार्ग कुंजडा बाखल की शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

कुमेडी आईएसबीटी से चलेंगी सबसे ज़्यादा बसें, 80 हजार यात्री प्रतिदिन कर सकेंगे सफर

एमआर-4 सड़क बनने के बाद सुधरेगा शहर का ट्रैफिक

आइएसबीटी से रेलवे स्टेशन तक अब पहुंच होगी आसान

इंदौर। शहर के अंदर से संचालित होने वाली बसों को बाहर से संचालित करने के लिए आइएसबीटी की योजना बनी थी। नायता मुंडला आएसबीटी बनने के बाद बसों का संचालन शुरू हो गया है। वही कुमेडी आइएसबीटी का निर्माण कार्य जारी है।दिसंबर तक निर्माण कार्य पूरे करने का लक्ष्य रखा गया है। इस बस स्टैंड से सर्वाधिक बसों का संचालन होगा। आइएसबीटी पर बने वातानुकूलित टर्मिनल से 80 हजार यात्री प्रतिदिन सफर कर सकेंगे। यह शहर का पहला बस स्टेशन होगा, जो पूरी तरह से वातानुकूलित होगा।इंदौर विकास प्राधिकरण (आइडीए) द्वारा कुमेडी में अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आइएसबीटी) का निर्माण कार्य जारी है। यहां पर 90 प्रतिशत कार्य पूरे हो चुके है। टर्मिनल में ग्लास लगाने का कार्य किया जाना है।यह शहर का सबसे बड़ा बस स्टैंड होगा और यहां से 1440 बसों का संचालन किया जा सकेगा। वातानुकूलित टर्मिनल में 500 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था रहेगी। ट्रेवल्स संचालकों के लिए

भी ऑफिस बनाए गए हैं।

101 करोड़ की लागत से 15 एकड़ में बन रहे बस स्टैंड में सभी आधुनिक सुविधाएं यात्रियों को मुहैया होगी। आईडीए के मुख्य कार्यपालिक अधिकारी आरपी अहिरवार का कहना है कि आईएसबीटी पर अंतिम चरण के कार्य किए जा रहे है। जल्द ही सभी काम पूरे कर लिए जाएंगे। यात्रियों के लिए यहां सभी आधुनिक सुविधाएं जुटाई जा रही है।

14 टिकट काउंटर और 16 रेस्टोरेंट- आइएसबीटी में बसों की पार्किंग की विशेष सुविधा मिलेगी। आगमन और निर्गम की व्यवस्था भी पृथक होगी। यात्रियों की सुविधा के लिए 14 टिकिट काउंटर बनाए गए हैं। बसों में यात्रियों को बैठाने और उतारने के लिए 43 प्लेटफार्म बनाए गए है। बस स्टैंड पर यात्रियों के लिए 16 रेस्टोरेंट बनाए जाएंगे। इसके अलावा 37 दुकाने भी अन्य सामग्री के विक्रेताओं के लिए बनाई गई है।

पुस्तक समीक्षा

डॉ. साक्षी मिश्रा
समीक्षक

ऊर्जस्वी: सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा देती पुस्तक

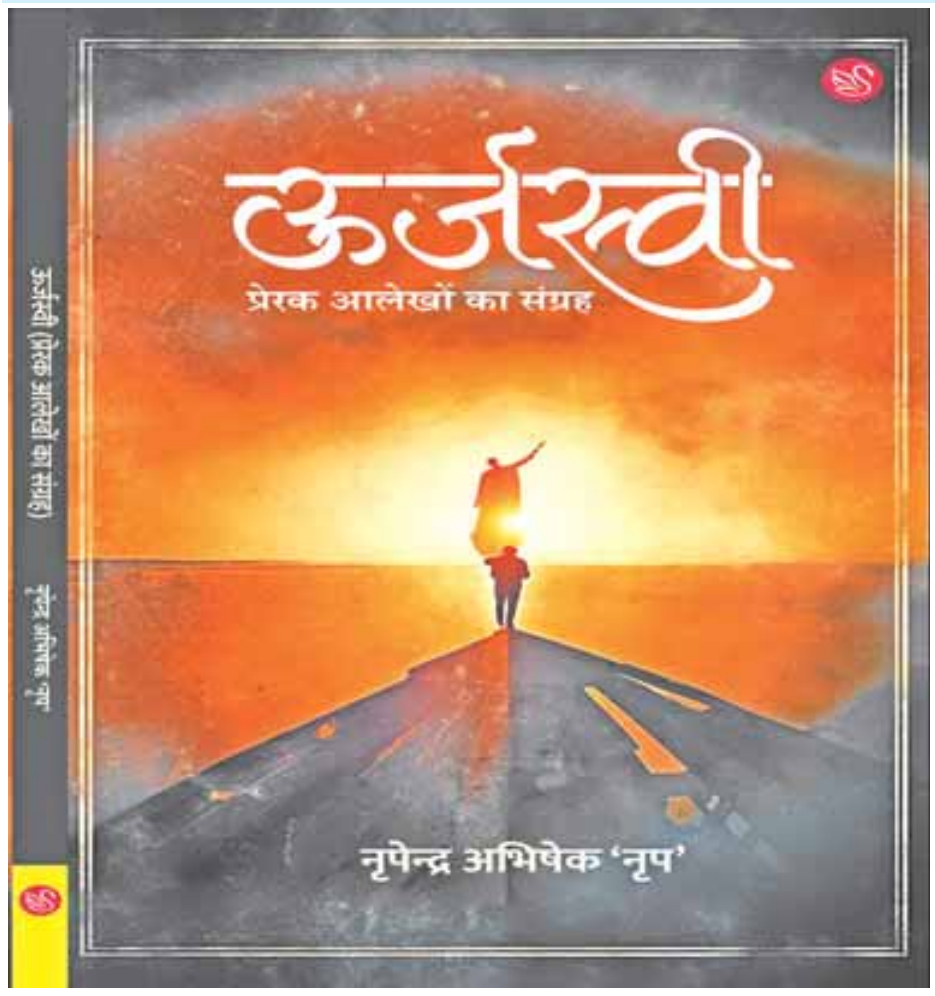

ऊर्जस्वी÷ पुस्तक लेखक नृपेन्द्र अभिषेक नृप द्वारा लिखित एक प्रेरणादायक कृति है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक न केवल जीवन जीने की कला सिखाती है, बल्कि मनुष्य को नैतिकता, सदाचार, प्रेम और परोपकार की दिशा में प्रेरित करती है। इस पुस्तक में कुल बत्तीश आलेख सम्मिलित हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

नृपेंद्र अभिषेक नृप की पुस्तक ÷ ऊर्जस्वी÷ प्रेरक और सकारात्मक ऊर्जा से भरी हुई आलेखों का संग्रह है। इस पुस्तक का प्रत्येक आलेख जीवन में आने वाली चुनौतियों और परेशानियों का सामना करने के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इनके लेखन की सरल और प्रभावी शैली पाठकों को गहरे रूप से प्रभावित करती है, जिससे वे अपने जीवन में होने वाले विभिन्न संघर्षों और अस्थिर परिस्थितियों का समाधान पा सकते हैं। पुस्तक में दिए गए आलेखों का मुख्य उद्देश्य पाठकों को मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक शक्ति प्रदान करना है, ताकि वे कठिनाइयों से पार पा सकें और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकें। प्रत्येक आलेख प्रेरणादायक विचारों और जीवन से जुड़ी सच्ची घटनाओं पर आधारित है, जो पाठकों को गहराई से सोचने पर मजबूर करते हैं।

पुस्तक के पहले आलेख ÷असफलता से सीखना सफलता ही तो है÷ में लेखक ने कहा है कि असफलता को जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। उनका मानना है कि असफलता से घबराने के बजाय, हमें इससे सीखना चाहिए। असफलता हमें अपने कमजोरियों को समझने और उन्हें सुधारने का अवसर देती है, जो अंततः सफलता की ओर ले जाती है। जबकि एक अन्य आलेख ÷बदले की भावना का करें परित्याग÷ में लिखतें हैं कि बदले की भावना न केवल व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर बनाती है, बल्कि यह समाज में नकारात्मकता भी फैलाती है। लेखक का संदेश स्पष्ट है कि बदला लेने की बजाय माफी और सहनशीलता का मार्ग अपनाना चाहिए, जिससे जीवन में शांति और संतुलन बना रहे।

आलेख ÷स्वार्थ साधन हेतु न बने अनैतिक÷ व्यक्ति को स्वार्थ साधने की प्रवृत्ति से बचने की प्रेरणा देता है। जबकि ÷पाप मुक्त हो कर जीवन को खुशहाल बनाएं÷ के अनुसार जीवन को सुखी और संतुलित बनाने के लिए पाप और गलतियों से मुक्ति आवश्यक है। यह आलेख व्यक्ति को अपने जीवन में आत्मनिरीक्षण करने और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। एक अन्य आलेख ÷इंसान को हमेशा संतुष्ट रहना चाहिए÷ में लिखतें हैं कि संतोष एक ऐसी भावना है जो मनुष्य को मानसिक शांति प्रदान करती है। यह लेख व्यक्ति को असीमित इच्छाओं से बचने और जीवन के छोटे-छोटे पलों में खुशी तलाशने की प्रेरणा देता है।

÷जीवन के लिए अनमोल धन है सच्चा मित्र÷ आलेख में मित्र और मित्रता को बखूबी लिखा है।सच्चे मित्र का महत्व जीवन में किसी भी अन्य संपत्ति से अधिक होता है। यह लेख दोस्ती की गहराई और उसके महत्व पर जोर देता है। ÷सांसारिक शांति में सहायक है प्रेम÷ में लिखतें है कि प्रेम ही वह तत्व है जो व्यक्ति और समाज को जोड़ता है। यह लेख प्रेम की शक्ति और उसके सामाजिक महत्व को उजागर करता है। इसी तरह से कुल बत्तीस आलेखों ने इस पुस्तक की खूबसूरती बढ़ा दी है और ये सभी आलेख हमारी ज़िंदगी को बदलने में सहायक साबित हो रहा है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल समस्याओं को दर्शाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनके समाधान पर भी जोर देती है। यह पुस्तक हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए उपयुक्त है और जो लोग जीवन में सकारात्मकता की तलाश कर रहे हैं, उनके लिए यह पुस्तक एक उत्तम मार्गदर्शक साबित हो सकती है।

नृपेन्द्र अभिषेक नृप ने अपने आलेखों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया है और पाठकों को सही मार्ग दिखाने की कोशिश की है। हर आलेख जीवन के किसी न किसी महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालता है और हमें एक बेहतर व्यक्ति और समाज का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। ÷ऊर्जस्वी÷ एक ऐसी पुस्तक है जो आत्मनिरीक्षण और सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा देती है। यह पुस्तक उन लोगों के लिए आदर्श है जो जीवन में प्रेरणा और मार्गदर्शन की खोज में हैं।

पुस्तक- ऊर्जस्वी
लेखक- नृपेन्द्र अभिषेक नृप
प्रकाशन- स्वेतवर्णा प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य- 199 रुपये
पृष्ठ- 115 पेज

कविता

सोचा न था

देवेंद्रसिंह सिसौदिया

किसी दिन
उसके यूँ
गुम होने का भय तो था
पर वह
ऐसा गुम होगा
सोचा न था।

कहते हैं
अकूत होता है
इंसान का इंसान पर
भरोसा
पर ऐसे टूटेगा
सोचा न था।

कोई
किसी का
इतना हो सकता आदी
कि अंधभक्त
हो जायेगा
सोचा न था।

पतझड़ के बाद
आता है बसंत
करता रहा मैं
बेसब्री से इंतज़ार
पर इंतज़ार, इतना लम्बा होगा
सोचा न था।

विरान जंगल में
सूखे दरख्तों के बीच
सुर्ख लाल फूलों से लदा
एक गुलमोहर का पेड़
फिर आशा जगा देगा
सोचा न था।

छोटी कहानी

ब्रजेश कानूनगो

लकड़ी की घंटी

दिल्ली का टीवी रिपोर्टर रंजन इस शहर में रिपोर्टिंग के लिए आकर बहुत ज्यादा उत्साहित था. खुशी इस बात की भी थी कि अपने स्कूल के दिनों का उसका खास दोस्त अभिज्ञान भी इसी शहर में रहता था. मित्र से मिलने का सुख उसकी यात्रा को और अधिक उमंग और कौतूहल से भर रहा था. दिन में अपना कार्य निपटा कर शाम को अभिज्ञान के साथ पुराने दिनों को दोबारा से अनुभव करने की कल्पना उसे रोमांचित कर रही थी. छोटे से कस्बे के सरकारी स्कूल में रंजन और अभिज्ञान ने अपनी प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई की थी. फेसबुक पर पुराने साथी से मुलाकात के बाद संयोग से आज मिलने का प्रत्यक्ष अवसर भी अनायास ही मिल रहा था.

नाइट कल्चर और मेट्रो में बदलते शहरों में युवाओं की स्थिति को लेकर रंजन को एक स्टोरी करनी थी, जिसके तहत फूड डिलीवरी और डिलीवरी बॉयज को लेकर रंजन को एक खास वीडियो रिपोर्ट अपने चैनल के लिए तैयार करनी थी.

खानपान के मामले में इस शहर को बड़ी ख्याति प्राप्त थी. दुनियाभर के लोग यहां के जायके का मजा लेने देश विदेश से खिंचे चले आते थे. सोशल मीडिया के दौर में फूड ब्लॉगर्स ने इस विशेषता को और अधिक व्यापक और चर्चित बना दिया था. स्ट्रीट फूड के बड़े बड़े बाजार दिन रात गहमा गहमी और रौनक से भरे होते थे. रंजन ऐसे ही एक बाजार में अपनी मोटर साइकिलों पर बैठे फूड डिलीवरी कंपनी के आदेश का इंतजार करते लड़कों के समूह से मुखातिब हो रहा था, बतिया रहा था. कई लड़कों से डिलीवरी सिस्टम , कठिनाइयों और ग्राहकों के व्यवहार आदि जैसे विषयों पर बातचीत की और अपने कैमरे में रिकॉर्ड करता रहा.

जब एक डिलीवरी बॉय के पास अपना कैमरा लेकर पहुंचा तो वह युवक थोड़ा सकपका सा गया.

%क्या नाम है तुम्हारा?% रंजन ने पूछा तो वह थोड़ा पीछे हट गया और बोला, % सर प्लीज! शूट मत कीजिए, मैं कैमरे पर बात नहीं करूंगा.%

%छोड़िए, हम ऐसे ही बात करते हैं%.रंजन ने कैमेरा हटाते हुए बातचीत जारी रखी.

%चलिए नाम मत बताइए, यह तो बताइए क्या पढ़ाई की है आपने?%

%मैंने एमएससी किया है सर बॉटनी में. नौकरी नहीं मिली है अब तक. कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी की थी लेकिन पर्चे लीक हो गए. परीक्षाएं रद्द हो गई, कुछ तो करना ही था इसलिए डिलीवरी बॉय का काम कर लेता हूं. व्यस्त भी रहता हूं और नौकरी नहीं मिल पाने की थोड़ी हताशा से भी उभर जाता हूं.%

%परिवार वाले जानते हैं कि आप विज्ञान की बड़ी डिग्री लेने के बावजूद घर घर फूड पैकेट पहुंचाते हैं?%

रंजन ने पूछा तो युवक बोला, %घर वालों को बताया नहीं है सर, उनकी समाज में थोड़ी अलग प्रतिष्ठा है, जमीन जायदाद है, पर सब केवल नाम भर की ही रह गई है अब. इसीलिए कैमरे पर आने से मना किया है सर%. युवक ने बहुत संकोच से रंजन से कहा.

%नहीं नहीं, आप आश्वस्त रहिए. हम केवल बातचीत ही करेंगे और अपनी रिपोर्ट बनाने में इससे हमें काफी मदद मिलेगी. वैसे कोई काम छोटा बड़ा नहीं होता. इन स्थितियों के लिए आप कदापि दोषी नहीं हैं%. रंजन ने कहा और अन्य युवकों से चर्चा करने लगा. रंजन ने बाजार में बहुत से लोगों से देर तक गुफ्तगू की.

काम समाप्त कर रंजन अपना सामान, कैमेरा आदि होटल में छोड़ एक टैक्सी से महानगर सीमा में नए-नए शामिल हुए ग्रामीण इलाके में अभिज्ञान के घर की ओर रवाना हो गया.

ख्यालों में डूबे रंजन को स्कूल के दिन याद आ रहे थे. अभिज्ञान और वह एक साथ बैठकर कस्बे के सरकारी स्कूल में पढ़ा करते थे. अभिज्ञान बहुत मधुर आवाज में फिल्मी गीत गाया करता था, उसकी आवाज बहुत अच्छी थी. स्कूल की छुट्टी होने पर गुरुजी उसी से घंटी बजवाया करते थे. वह जब मुस्कुराता हुआ बड़ी लय में धातु की घंटी पर लकड़ी का हथौड़ा पीटता तो सारे बच्चे अपना बस्ता उठा चहकते हुए अपने घरों की ओर दौड़ पड़ते.

रंजन अभिज्ञान के घर पहुंचा तो वह उसी का बेसब्री से इंतजार कर रहा था.

%कैसे हो अभिज्ञान भाई! कारोबार और परिवार के क्या हाल-चाल हैं?% गले मिलते हुए रंजन ने बातचीत की शुरुआत की.

सब बहुत बढ़िया है भाई! बड़े मजे से कट रही है जिंदगी. बच्चे भी अच्छा पढ़ लिख गए हैं, बेटी कनाडा में अपने पति के साथ जॉब कर रही है. और बेटा यहीं एक कॉलेज में प्रोफेसर हो गया है.

रंजन ने महसूस किया अभिज्ञान जैसे यह सब बहुत उत्साह से नहीं बता रहा था. उसकी बातों में खुशी की खनक नहीं थी. एक खोखलापन साफ महसूस हो रहा था. जैसे बचपन के स्कूल की घंटी धातु की नहीं बल्कि वहां लकड़ी का कोई फट्टा लटका दिया गया हो.

दोनों मित्र काफी देर तक बातचीत करते रहे,बातों बातों में रात के दस बज गए. तभी एक बाइक घर के सामने रुकी और एक जाना पहचाना डिलीवरी बॉय लगभग दौड़ता हुआ ऊपर की मंजिल की ओर सीढ़ियां चढ़ गया.

%शायद शांतनु भी आ गया है कॉलेज से. लगता है आज उसकी क्लासेस देर तक चली होंगी!% अभिज्ञान बुदबुदाया.

रंजन ने महसूस किया अभिज्ञान ने फिर घंटी बजाई थी. लकड़ी की घंटी से निकली खोखली आवाज रंजन को उदास कर गई.

लघुकथा

कागवास

माधुरी व्यास 'नवपमा'

जिस पेड़ पर एक कौवा आराम से सो रहा है उसी पेड़ पर दूसरा कौवा आया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। कौवे के आराम में खलन हुआ तो उसने कहा ङ्क÷ क्यों भाई इतनी जोर-जोर से क्यों चिल्ला रहे हो ? ÷ वह बोलाङ्क÷ एक तो मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है और ऊपर से प्यास भी लगी है ।÷ ÷क्यों भाई आज तुम्हें कहीं खाना और पानी नहीं मिला। ÷ इस पर दूसरे कौवे ने जवाब दियाङ्क÷ मिला तो था किंतु मैंने खायाङ्कपीया नहीं।÷ आश्चर्य से पहले कौए ने प्रश्न कियाङ्क ÷ क्यों ! ऐसा क्यों किया तुमने।÷ दूसरा कौआ बोलाङ्क÷ अरे भाई एक घर के लोग पंडित जी का इंतजार कर रहे थे, पंडित जी को देर होने की वजह से उनके बारे में ही उल्टाङ्कसीधा बक रहे थे । आगे बढ़ा तो वहाँ पर दादाजी का श्राद्ध था और दादी को डांट रहे थे । कह रहे थे कि तुमको बहुत जल्दी होती है खाना खाने की। थोड़ी देर रुक नहीं सकती क्या ? यह सुनकर तो मेरा मन बहुत दुखी हो गया। क्योंकि दादी भूख से बिलख रही थी।दोनों थोड़ी देर चुप रहे। फिर पहला कौआ बोलाङ्क÷ अरे भाई मैं तो आज एक ही घर में गया, मन भी तृप्त हो गया और आत्मा भी । ÷ दूसरे कौए ने पूछा भाई ऐसा क्या देख लिया वहाँ पर? ÷ ÷ अरे मैं वहाँ बहुत देर बैठा , घर की महिलाएँ बड़ी शांति से प्रसन्न होकर भोजन बना रही थी। समय पर धूपङ्कध्यान हुआ। फिर भोजन परोसा, दादी का श्राद्ध था और दादाजी के साथ ,पंडित जी, बच्चे और अन्य परिजन सभी आराम से एक पंक्ति में बैठकर भोजन करने लगे। छोटे से बच्चे को सभी दुलार रहे थे , ताकि धूप और भोजन के समय पर वह रोए नहीं । घर की महिलाएँ और दोनों बेटे बड़े प्रेम से भोजन परोस रहे थे। यह सब देखकर तो मेरा मन प्रसन्न हो गया। जैसे ही उन्होंने कागवास दिया मैने बड़े आराम से खाया , सकोरे से पानी पिया और अब आराम करने यहाँ पहुँच गया । ÷ यह सुनकर दूसरे कौए की आँखों में आँसू आ गए। पहला कौवा बोलाङ्क÷ अरे भाई रोते क्यों हो ? अभी भी मेरे कागवास से खाना बचा हुआ ,वही रखा हुआ होगा। चलो मैं तुमको भोजन करवाता हूं ।÷ दोनों कौए कागवास की ओर उड़ गए।

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ
लेखक व्यंग्यकार हैं।

संतान पाते हैं, पर उन्हें भूल जाते हैं

बा बा जी अपनी फुल स्पीड में प्रवचन दे रहे हैं-हमारे दरबार में जो भक्त हाजिरी लगाता है, वह संसार के समस्त धन, वैभव से परिपूर्ण हो जाता है। अन्न-धन से उसका घर लबालब भर जाता है, और फिर एक दिन वह संसार के भव सागर से ऐसे पार हो जाता है, जैसे दिल्ली में मेट्रो धड़धड़ाते हुए सुरंग से पार हो जाया करती है।

बस जरूरत इस बात की है कि वह हमारे दरबार में आने से पहले एक रसीद जरूर कटवाये, जो कम से कम इक्कीस सौ की हो और इससे अधिक कटवाना चाहे तो भक्त की अपनी श्रद्धा। अपना विश्वास। रसीद कटने के बाद आप को एक टोकन दिया जायेगा, जिसमें आप को दरबार में आने की नियत तिथि दी जायेगी, उसी नियत तिथि में आप को दरबार में हाजिरी लगानी है, अक्सर देखा गया है कि लोग जल्दी बाजी में यहां चले जाते हैं और अपने नंबर के लिए हमारे आश्रम में महीनों पड़े रहते हैं। फिर हमारे भंडारे की रसद पर अतिरिक्त बोझ बनते हैं।

मेरा सभी भक्तों से निवेदन है कि वह दरबार में आने से पहले अपनी रसीद कटाएं। टोकन लें फिर समयानुसार दरबार में हाजिर होकर अपनी समस्या बताएं, आप की लगी अर्जी पर ऊपर वाला बहुत जल्दी ही आप का भला

करेगा। बस धैर्य और विश्वास बनाए रखें। भारी भीड़ में, होने वाले हादसों से हमें बचाए रखें। मैं आप के लिए ही नित प्रतिदिन ईश्वर की साधना में चौबीसों घंटे लगा रहता हूं। यह मैं दावा तो नहीं करता, पर लोगों का अटूट विश्वास यह है कि भक्तों की तमाम समस्याओं का, समाधान हमारे दरबार में धुंआधार तरीके से हो रहा है। इस बात की पुष्टि सोशल मीडिया की अनेक साइटें भी कर रही हैं।

देश की विकास दर बढ़ाने में हमारा अमूल्य एवं अतुलनीय योगदान है। विकास दर यानी देश की जीडीपी बढ़ाने में मैं अपना दिन-रात उत्सर्ग कर रहा हूं। मेरा त्याग देश के लिये चिरंतन चलता रहेगा, पर कुछ राक्षसी आत्माएं हमें देख कर हमेशा जलती-कुढ़ती रहती हैं। वे कुढ़ती रहें, खाली-पीली हाथ मलती रहें, पर हमारा वे एक भी बाल बांका नहीं कर पाएंगी।

जो निःसंतान हो, वह मेरे आशीर्वाद से भगवान की कृपा से संतान प्राप्त कर सकते हैं,.... लोग संतान तो पाते हैं, पर हमें भूल जाते हैं। जिन्हें सरकारी नौकरी न मिल रही हो ,उन्हें नौकरी मिल सकती है, जिन्हें व्यापार में हानि हो रही हो, उन्हें व्यापार में लाभ ही लाभ मिलेगा, खोया प्यार हन्डरेड वन परसेंट वापस मिलेगा, मेरे दरबार में लगी उनकी अर्जी से उनका बेवफा सनम प्यार की सारी हदें पार करके यही गाता दौड़ा चला आयेगा, %आये हो मेरी जिंदगी में तुम बहार बनके।% तमाम रोगों और दोषों से हम भक्तों को मुक्ति दिलाएंगे, बहुत से दम्पत्ति अपने वैवाहिक जीवन के वह सांसारिक सुख नहीं उठा पा पाते, जिसके लिए वह विवाह के सूत्र में बांधे जाते हैं, और वो खून के आंसू रोते हैं। ऐसे संसार से हारे लोग, हमारे यहां के तमाम प्रकार के ऑफर्स का लाभ उठा सकते हैं। हर समस्या का समाधान हमारे दरबार में होगा। जल्द ही हम टोकन वाली मैनुअल प्रथा कम करके, ऑन लाइन टोकन वाली प्रक्रिया शुरू करके डिजिटल इंडिया में प्रवेश करेंगे।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मानसिक जद्दोजहद के बाद की कला और विचार

रंग संक्रमण का दौर हो, खुद को बचा सकने हेतु जद्दोजहद जारी हो पर बच ही जाना है, संशय है। बात कला की है और कला में भी अमूर्तन और यथार्थ के बीच के द्वंद्व की। अमूर्त कृतियों के बल पर वैश्विक स्तर पर परचम रातों-रात लहराया जा सकता है जबकि यथार्थ का कोई भविष्य ही नहीं..., ना ना ना कौन कहता है? मैं तो कहता हूं यथार्थ हमेशा था और यथार्थ हमेशा-हमेशा रहेगा...। दौर ऐसा ही है, खुद को छोड़ कर बाकी की कृतियां कला नहीं है, लगभग हर कलाकार यही सोचने लगा है, कुछ अपवाद भी हैं। मैं और बस मैं की हवा चल रही हो जैसे। गांव के धूल भरी गलियों के, हंसी ठिठोलियों के बीच स्कूल जाने से भी पूर्व यानी गदहिया गोल में भी नाम लिखे जाने से पूर्व कलाकृतियां बनाने वाले बालक सुनील विश्वकर्मा जो आज डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाये हुए हैं, कला को लेकर इसी अमूर्तन और यथार्थ के बीच उठे उहापोह में पिस रहे थे लेकिन गांव की महक कहें या बचपन के संस्कार और गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी द्वारा दी गई शिक्षा का असर कि सुनील जी यथार्थता की तरफ ही बढ़े और इस तरह बढ़ें कि कृतियों में भव्यता अपने पूरे वजन के साथ उपस्थित हुई है।

दिव्यता हर कृतियों में हैं और फिर वो चाहे रंग में हो, रेखा में हो या फिर आकृतियों में। सृजन रग-रग में बसा है आपके। यथार्थ के नजदीक आप शुरू से ही रहे हैं। वस्तुओं, परिस्थितियों, समाज एवं संस्कार को अच्छे से महसूस करते हैं आप, जो कृतियों में स्पष्टत- झलकती भी है। पिता जी का पूरा सहयोग रहा, यहां तक कि जितने चित्र बनाते उतनी बार कुछ खाने या खरीदने हेतु पैसा भी आपको पिता जी के तरफ से मिलता था, लोहे पर, लकड़ी पर कभी राम, कभी गणेश जी को बनाया करते थे, कभी-कभी तो एक ही दिन में पूरी कॉपी, जो बीस-तीस पृष्ठों की होती थी भर जाती थी। हौंसला बढ़ता था जबकि बड़े भैया चाहते थे कि भाई हमारा डॉक्टर बने, गांव में लगभग सभी यही चाहते हैं। रंग और ब्रश गांव में बढ़िया वाले नहीं मिलने पर आप अधिकतर रेखांकन ही किया करते थे जो आगे चलकर बहुत काम आई। गांवों में शादियों या और त्योहारों में दीवारों पर चित्र बनाने का रिवाज रहा है गुरू विश्वनाथ त्रिपाठी जी को बुलाया जाता था, जो बिना पेंसिल के कितना भी बड़ा म्यूरल हो सीधे ब्रश से बनाया करते थे, गजब का कमांड था उनका। जहां सीखने हेतु बालक सुनील भी जाते थे, विश्वनाथ त्रिपाठी आपके पहले गुरू रहे हैं। दीवारों पर काम करने के बाद घर आकर किसी कोने में छिप कर खुद चित्र बनाना आपकी आदत हो गई, छिपने का कारण मां रहीं, मां को ये सब पसंद नहीं था हालांकि बाद में विचार बदल गये। आपके चित्र भी

पसंद किए जाने लगे, लोग आपको भी बुलाने लगे शादियों त्योहारों में। कई दीवारें आपके सृजन से सुंदर दिखने लगीं, जगह-जगह आपका नाम दिखने लगा। ये सब ऐसे ही चलता रहा असली बदलाव हुआ वरिष्ठ कलाकार वासुदेव कामथ जी के पत्र से। बालक सुनील का बनाया चित्र कोई खरीदा था और वो ले जाकर कामथ जी को उपहार स्वरूप भेंट कर दिया।

कामथ जी ने लिखा- आपके चित्र मैंने देखे, बहुत ही सुन्दर हैं, आप आगे बहुत कुछ कर सकते हो, संभव हो तो ललित कला की पढ़ाई करो। जीव विज्ञान से पढ़ाई कर रहे छात्र को तब तक ये नहीं पता था कि केवल और केवल कला की भी पढ़ाई होती है। अब तक दूसरे बोझिल विषयों से जूझ रहे मन में खुशी कई गुना बढ़ गई, हौसलों में कई पंख एक साथ जुड़ गये और उड़ने को बेताब रहने लगा युवा मन। पहले ही प्रयास में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग में दाखिला मिल गया। हरे-भरे परिवेश में आपकी कृतियां फलने-फूलने लगी। परिसर में आधुनिकता के नाम पर बन रही अमूर्त कृतियां कभी-कभी विचलित करती थीं कि बाकी सब तो अमूर्त बना रहे हैं, यथार्थ के नाव पर सफर कैसा होगा? आदि-आदि, पर आप भारतीयता पर अडिग रहे, अपने लक्ष्य को लेकर अडिग रहे और टिके रहे अपने विचारों पर। रेखांकन में निरंतरता बनी रही, धीरे-धीरे विश्वास ने काम करना शुरू किया और आपको स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। गांव घर जिले के जो लोग सोचते थे कि पेंटिंग सीख कर वापस यहीं आकर एक गुमटी खोलेंगे और नंबर प्लेट वगैरह बना कर कमाई करेंगे, के विचार बदले और आपके यहां से कई युवा एक साथ इस तरफ झुके और आज मऊ का कोपागंज कला का गढ़ बना हुआ है।

छोटे से कस्बे कोपागंज से होते हुए वैश्विक स्तर तक का सफर आसानी से भले ही प्राप्त हो गया हो पर फॉर्म वगैरह भरना बड़ा भारी काम लगता था वैसे भी कलाकारों को कागजी कामों में मजा कहां? एम.एफ.ए के बाद किसी मित्र ने चाइनीज स्कॉलरशिप हेतु आपका फार्म भर दिया, चयन भी हो गया, मजे की बात देखिए कि पहली बार दिल्ली की यात्रा तब हुई जब आपको चाइना जाना था। लगातार दो वर्षों तक वहां के कला को सीखने समझने का मौका मिला, राइस पेपर पर पेन इंक से काम वहां की विशेषता है। डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा कहते हैं कि %मैं चाइना में सुबह पांच बजे उठ जाता था रात के दो-दो बजे तक काम किया करता था, मुझे सीखने में बड़ा मजा आता था। मुझे माध्यम प्रभावित नहीं कर पाता क्योंकि मुझे पता है कि बनाना तो चित्र है, चित्र की बारीकियां मुझे आनी चाहिए माध्यम कोई हो। हो सकता है एक बार माध्यम समझ में ना आए लेकिन चार से छ- बार के बाद माध्यम की जो विशेषता होगी उसको पकड़ लेने पर आप चित्र बना लेंगे, चित्र की समझ आपको होनी चाहिए। चाइना में लगभग तीन महीने बाद मैं एक चित्र बनाकर सर के पास ले गया उन्होंनें कहा कि इतनी जल्दी कैसे सीख गए? मेरा जवाब था कि मैं अपने यहां से मास्टर करके आया हूं चित्र बनाना मुझे आता है, सिर्फ माध्यम सीखना है जो मैं सीख गया। वहां मैंने लगभग 600 पेंटिंग बनाई%। चाइना में निर्मित आपके चित्रों को संस्कार भारती द्वारा यहां के कई विश्वविद्यालयों एवं गैलरियों में प्रदर्शित किया गया, डेमोंस्ट्रेशन के कार्यक्रम भी रखे गये, जिले स्तर पर भी आपके कार्यक्रम रखे गये। जल्द ही आपको सेंट्रल हिंदू बॉयज स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गई। निरंतरता यहां भी बनी रही और लगभग पांच साल यहां पढ़ाने के बाद महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में आपका चयन हो गया। आज आप वहां विभागाध्यक्ष हैं, बच्चों को कला के तमाम बारीकियों से परिचित करा रहे हैं। आपके सिखाए छात्र अच्छे पदों पर हैं। आपके काम लखनऊ के अंबेडकर पार्क सहित कई विशेष जगहों में भी प्रदर्शित हैं। आपके कृतियों में यथार्थता और अपने लोक के साथ बनारस है, वहां का परिवेश है, महक है, पर्व है, झांकियां हैं, घाट, साधू, नाव, सीढ़ियां हैं, रामनगर और वहां का इतिहास है। धार्मिक ग्रंथों से ली गई कहानियां हैं और इन सभी के साथ कृतियों में भव्यता है कारण आपके यहां परिप्रेक्ष्य पर बहुत ही जबरदस्त काम है। रंग जो शुरु से ही बोलते रहे हैं अब और भी खुल कर बतियाते हैं। पात्रों के हाव-भाव बिल्कुल ही सहज हैं। वास्तविक वातावरण का सृजन इतने बढ़िया तरीके से होता है कि चित्र और हकीकत में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता। है। दर्शक अनायास ही वातावरण के आस-पास खुद को पाता है और जुड़ाव गहरे तक स्थापित हो जाता है।

बात आती है ललित कला अकादमी की तो वही घिसी-पिटी सी बातें कि वहां तो अच्छे कामों का चयन ही नहीं होता सब ऐसे ही चलता है जैसी तमाम बातें और साथियों के साथ ही आपके मन में भी था, तभी किसी का धीरे से ये कहना कि क्या आपने अपने काम कभी वहां भेजें हैं या ऐसे ही प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं? बात सुनते ही आपको झटका लगा कि वाकई मैंने तो कभी भेजा नहीं। पहली बार राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के वार्षिक प्रर्दशनी में आप द्वारा अपने चित्र भेजे गये और पहली बार में ही चयन भी हो गया हालांकि पुरस्कार तीसरी बार में मिला। आप कहते हैं कि %विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, निरंतर स्केच करते हैं, निरंतर पेंटिंग बनाते हैं अब तो आदत सी बन गई है। चूंकि हम शिक्षक हैं बच्चों को हमेशा कुछ नया सिखाने की जुगत में रहते हैं इसीलिए हमेशा अपडेट रहना चाहते हैं और कुछ ना कुछ नया जरूर सीखना चाहते हैं, सीखते भी रहते हैं%। आप लगभग सभी माध्यमों में अच्छा करते हैं। आप शुरु से ही कल्पनाशील रहे हैं, विषय भले ही यथार्थ रहे हों पर प्रस्तुति में कल्पनाशीलता ने बहुत साथ दिया है और साथ दिया है गुरू त्रिपाठी जी के गुण ने। उनका कहना कि जिस भी चित्र को बनाना हो पहले आंख बंद कर के, साधना में लीन हो उसके बारे में खूब सुंदर सी कल्पना करो फिर आंख खोलो, कैनवास पर आपको चित्र बना मिलेगा बस वहां ब्रश चलाना होगा चित्र पूरा मिलेगा। ध्यान की प्रक्रिया गुरू जी से प्राप्ति के बाद आप आज भी ऐसे ही चित्र बनाते हैं। सुनील कुमार अभी हाल ही में अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी बनाये गए हैं। अयोध्या में भगवान श्री राम जी की मूर्ति का मूल रेखांकन बनाने का श्रेय भी आपको ही है।

पुस्तक चर्चा

ओम प्रकाश

(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

इंसानियत को राहत की सांस देती किताब

भिवंडी मुस्लिम समाज की बहुत पुख्ता जमीन है। पूर्वांचल की तो कई सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को भिवंडी ने बरसों से स्वर दिया। भिवंडी के और कुछ और सुधीजनों के सहयोग से और जाने-माने पत्रकार और चिश्ती पंथ के अनुयायी मुनीर अहमद मोमिन की प्रेरणा से इन दिनों इस्लाम को लेकर एक किताब आयी, जो खूब चर्चित हो रही है। किताब का नाम है %वो इस्लाम जो हम से कहीं छूट गया।% किताब के लेखक रिटायर्ड जज रजी अहमद चिश्ती हैं, जो पशुहारी शरीफ और बलिया की दरगाह के गद्दीनशीन पीर हैं। उन्होंने यह किताब बहुत अध्ययन और विचार से लिखी। इसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता, शिक्षा व्यवस्था, जिहाद, फिरकापरस्ती, हिंसा और आतंकवाद आदि करीब उन सभी विषयों पर खुली बातचीत है, जिनसे मौजूदा मुस्लिम समाज किसी न किसी रूप में जूझ रहा है।

वे कहते हैं %फिरकों ने इस्लाम को बाँट दिया गया है। इस्लाम के नाम पर इन फिरकों के अपने अक़ीदे चल रहे हैं। ये ही हिंसा आदि सारे फितूर की जड़ हैं। आम मुसलमानों को इन फिरकों के मायाजाल से बाहर निकलना चाहिए। कुरआन और हदीस में जो कहा गया है, केवल और केवल वही रास्ता सही है। इस्लाम शांति, अमन-चैन, भाई-चारे और खुदी को बुलंद करने का दर्शन है। उसके मूल में साधना और विचारशीलता है। जहां इसका अभाव है, वहां इस्लाम नहीं है।%

आगे उनका कहना है कि %फिरकों के सरमायेदार इस्लाम के भीतर रहते हुए इस्लाम के दुश्मन हैं, और शैतान का काम कर रहे हैं। जब यह मुमकिन न हुआ कि कोई दूसरा ईशदूत आये और कोई नया मज़हब बने; तो कुछ लोगों ने मुसलमान होने का दावा बरकरार रखते हुए अपने अक़ीदों के आधार पर इस्लाम को फिरकों में बाँट दिया। खिलाफत जब बादशाहत में बदल गयी, तब नस्ली हुकूमत को मज़बूत करने की भी जरूरत पड़ी। जिसके लिए बफर फिरकों का इस्तेमाल हुआ और शासक के हितों और उद्देश्यों को ध्यान में रख कर नियम और कानून बनाए गए।% %

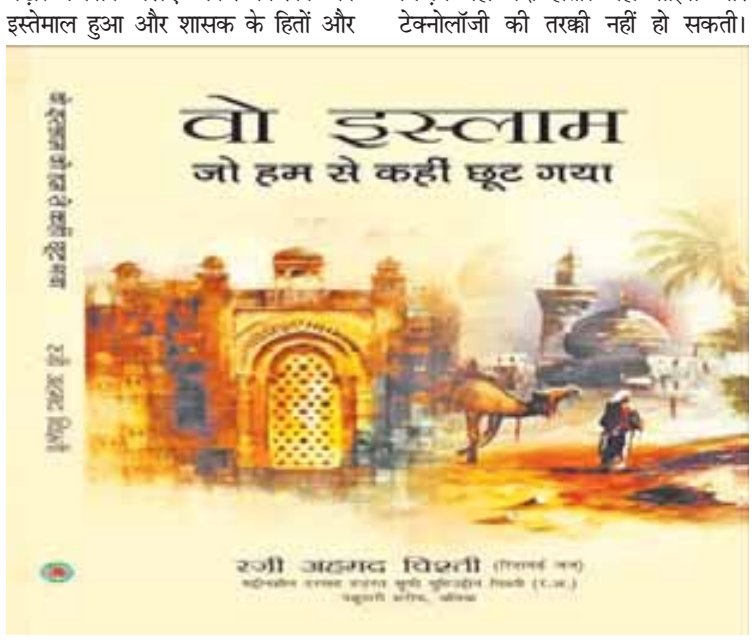

रजी साहब आगे लिखते हैं कि बादशाहियत और फिरकों के सदरमायेदारों ने इस बात की भी कोशिश की कि आम मुसलमान कुरआन को सही न समझ सके। समझता तो किसी भी शासक के लिए अपने व्यक्तिगत हितों को बढ़ावा देना मुमकिन नहीं होता। इसलिए कुरआन को लोगों की जुबान में नहीं आने दिया गया। कहा गया कि समझने की जरूरत नहीं, पाठ कर लो। जो मोक्ष पाने का रास्ता था, उसे गले की ताबीज़ बनाकर रख दिया गया।

वे लिखते हैं कि अल्लाह ने सबको अपने रास्ते चलने की पूरी आज़ादी दी है। लेकिन, इन फिरकों ने लोगों से वह आज़ादी छीन ली। यह जानते हुए भी कि जहां पर व्यक्तिगत आज़ादी न हो, वहां लोगों में विज़न नहीं पैदा होता। वहां साइंस और टेक्नोलॉजी की तरक्की नहीं हो सकती। पाबंदी के माहौल में सोचने-समझने की काबिलियत नहीं पैदा होती। वे कुरआनी शिक्षा से अलग हो गए। जिसका यह दुष्परिणाम हुआ कि आम मुसलमान अपनी परेशानी और बदहाली को आजमाइश का नाम देकर दुनियावी तरक्की से अलग और बुनियादी जरूरतों के लिए भी दूसरी कौमों और उनकी खोजों का मोहताज हो गया। तहकीकात करके किसी नतीजे पर पहुंचना और एक इन्साफ पसंद न्याय व्यवस्था को अपनाना नये ज़माने की दो अहम खूबियां हैं। जिनका मुस्लिम समाज को खुले दिल से स्वागत करना चाहिए।

यह बहुत अफसोस की बात है कि इस्लामी देश, जिनका निज़ाम मजहबी कायदे-कानून पर आधारित है, उनके यहां आज़ादी का कोई तसव्वुर नहीं है। वहां तालीम हाकिमाना माहौल में होती है। जिसमें बच्चों को सवाल पूछने की न आज़ादी है और न इजाजत। वहां सोच-विचार करके किसी बात को जानने पर जोर नहीं है। उनके मदरसों की तालीम यह है कि सोचने-विचरने की जरूरत नहीं। जो पहले से ही तय है, उसकी तक़लीद करो। रजी साहब निजी स्वार्थ और लाभ के लिए धर्म के इस्तेमाल को शैतानी हरकत मानते हैं। जिहाद को रोज-रोज की किचकिच से अलग, उस समय का युद्ध मानते हैं जब नैतिक मूल्यों पर कोई गहरा संकट आया हो। तुलना के लिए वे कहते हैं कि गीता में श्रीकृष्ण ने जिन परिस्थितियों में युद्ध के लिए निर्देश दिया, उस तरह की परिस्थितियों और उस तरह की मंशा से किया गया युद्ध जिहाद है।

वे कहते हैं कि अल्लाह ने सबको अपने रास्ते चलने की पूरी आज़ादी दी है। इसलिए किसी को किसी और के धर्म या रहन-सहन, खान-पान, पहनावे या रीति-रिवाज आदि का दारोगा बनने का अधिकार नहीं है। जिहाद रोज रोज की किचकिच नहीं है। यह उस समय का धर्म युद्ध है, जब जब नैतिक मूल्यों पर कोई गहरा संकट आया हो। जैसा महाभारत युद्ध के समय आया था। जिहाद उस तरह की परिस्थितियों में लड़ा जानेवाला युद्ध है। अध्याय दर अध्याय ऐसी अनेक बातें हैं, जो किताब को अविस्मरणीय बनाती हैं। और उन तनावों को कम करती हैं जो आजकल के माहौल में चिंता का सबब बन जाती हैं।

समवेत स्वर में क्रिया - प्रतिक्रिया

वक्रोक्ति

सुरेश उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती है और विज्ञान के नियमानुसार यह बराबर और विपरित दिशा में होती है. प्रतिक्रिया की भी कोई प्रतिक्रिया हो सकती है. ऐसी स्थिति में मूल प्रतिक्रिया को ही क्रिया निरुपित किया जा सकता है अर्थात प्रतिक्रिया को क्रिया से विस्थापित करा दिया जाता है. कभी कभी क्रिया व प्रतिक्रिया की क्रमबद्ध श्रंखला में क्रिया व प्रतिक्रिया इस तरह से गुथ्थमगुथ्था हो जाती है कि यह कहना मुश्किल हो जाता है कि कौन सी क्रिया है और कौन सी प्रतिक्रिया है. ऐसी स्थिति में जांच करने वाली एजेंसियो, समितियो के समक्ष भी गम्भीर चुनौतिया उत्पन्न हो सकती है और निष्कर्ष तो निष्कर्ष ही रहता है. खैर, ऐसी स्थिति में संदेह का लाभ (बेनिफिट आफ डाउट) भी असली किरदार को मिल सकता है. क्रिया व प्रतिक्रिया में व्यक्तिगत व समूहगत भागीदारी भी हो सकती है. कभी व्यक्तिगत क्रिया की सामूहिक प्रतिक्रिया हो सकती है तो कभी सामूहिक क्रिया की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया हो सकती है. व्यक्तिगत में तो व्यक्ति की जवाबदेही आसानी से तय हो सकती है लेकिन सामूहिक में जवाबदेही तय करना कठिन हो सकता है और कोई नही तो अज्ञात तो है ही. व्यक्तिगत हो या सामूहिक दोनो में एक अदृष्य शक्ति और हो सकती है जो नेपथ्य में सक्रिय रहती है. उसकी भूमिका प्रेरक, उत्प्रेरक व सहयोगकर्ता की हो सकती है. वह मुख्य खिलाडी होते हुए भी दृष्य में नही होता है. वह खेलता भी है, दर्शक बनकर देखता भी है और आनंद की अनुभूति भी लेता है. उसकी भूमिका, निशानदेही तथा जवाबदेही एक जटिल प्रक्रिया का हिस्सा होकर रह जाती है.

विगत कुछ समय की क्रिया व प्रतिक्रिया में ट्रेंड पर विचार करे तो एक समानता स्पष्ट दिखाई देती है. मान लिजिए कन्ही हिंसा / हत्या / बलात्कार / सामूहिक बलात्कार की घटना होती है तो प्रतिक्रिया के पूर्व यह देखा जाएगा कि वह किस राज्य या क्षेत्र की है तथा वन्हा सत्तारुढ कौन है. ऐसे में प्रतिक्रिया की जिम्मेदारी वन्हा के विपक्ष की होगी. वैसे पंथ व जाति के आधार की प्रतिक्रिया भी दिखाई देती है. ऐसी ही किसी दूसरे राज्य की घटना में प्रतिक्रिया की जिम्मेदारी वन्हा के विपक्ष की होगी, जो हो सकता है पहले प्रकरण में पक्ष की भूमिका में हो. पक्ष व विपक्ष की भूमिका स्पष्ट होने के बाद की स्थिति पर दृष्टि डाले तो प्रतिक्रिया के स्वर व कारवाई में एकरुपता या समानता दिखाई देगी. मोमबत्ती जूलूस, मौन जूलूस, धरना, प्रदर्शन के साथ फांसी दो ङ्क फांसी दो के नारे सुने जा सकते हैं. यह अलग बात है कि फांसी एक दंड है, उसकी अपनी न्यायिक प्रक्रिया है तथा दंड निर्धारण कर्ता का पद, सक्षमता व विवेकाधिकार सब अच्छी तरह परिभाषित है. इसके अतिरिक्त एक दूसरे से उनकी अन्य घटना पर चुप्पी के सवाल भी प्रतिक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा हो गया है. यह तो एक उदाहरण हुआ सामाजिक मुद्दो पर क्रिया ङ्क प्रतिक्रिया का.

यदि राजनीतिक वक्तव्य व आचरण को लेकर प्रतिक्रिया का स्वरुप देखे तो माफी मांगने के स्वर सुनाई देते है या त्यागपत्र की मांग की जाती है. सब तरफ से एक ही स्वर सुनाई देता है ङ्क माफी मांगो, माफी मांगो / त्यागपत्र दो, त्यागपत्र दो. कौन किससे माफी / त्यागपत्र मांग रहा है, किस बात पर मांग रहा है, यह सब गौण हो जाता है और माफी / त्यागपत्र की मांग के समवेत स्वर अगले किसी नए वक्तव्य तक चलते रहते हैं. माफी व त्यागपत्र मांगने का कोलाहल क्रिया ङ्क प्रतिक्रिया का समवेत स्वर स्थाई व शास्वत हो जाता है. विवादास्पद वक्तव्य सुर्खियो (हेड लाइन) की ग्यारंटी के साथ लोकप्रियता की सीढी सिद्ध हो रहा है तथा लोकप्रियता पद व टिकट की अर्हता है ही. अत- नए वक्तव्य के लिए ज्यादा इंतजार नही करना पडता है, एक वक्तव्य की गर्द बनी रहते दूसरा वक्तव्य आ जाता है और यह सिलसिला चलता रहता है. एक मौका चुके तो कोई अफसोस की बात नही दूसरा फिर उपलब्ध है. इसमे एक मजेदार बात यह भी हो सकती है कि कृत्य किसी का और माफी व त्यागपत्र किसी अन्य से भी मांगे जाते हैं. आजकल न्यायालयो में मानहानी के दावो को भी प्रतिक्रिया के स्वर की तरह देखा जा सकता है जो वृहद्स्तर पर मौखिक धमकी जैसे ही प्रयोग किए जाते हैं. यह भी ठीक ही है अन्यथा पहले से ही न्यायालय में लम्बित प्रकरणो में और इजाफा ही होता. अभी बडे पैमाने पर एफ आय आर (प्रथम सूचना रिपोर्ट या प्राथमिकी) दर्ज करने के स्वर सुनाई दे रहे हैं. कई केंद्रो पर बडे बडे नेताओ के नेतृत्व में बडे बडे समूह पुलिस थानो पर एकत्रित होकर एफ आय आर की मांग कर रहे है. नीति, कार्यक्रम, विचारधारा के बरक्स पुलिस थाने के सहारे राजनीति की नई ईबारत लिखने के जतन हो रहे हैं.

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

आकाश से ज़मीन पर आने की तथा-कथा है - कॉल मी बे

वेबसिरीज़ के लॉन्ग फॉर्मेट में लगभग सभी कद्दावर अभिनेत्रियां जैसे तब्बू ,काजोल और करीना कपूर आदि अपना दमखम दिखा चुकी है अब ओटीटी पर अनन्या पाण्डे जैसी नई पीढ़ी की नायिकाएं भी वेबसिरीज में आ रहीं है । अनन्या पाण्डे ÷ कॉल मी बे ÷ के साथ सामने आई हैं । निर्देशक कॉलिन डी कुन्हा की यह कहानी - ÷ एमिली इन पेरिस से ÷ प्रेरित लगती है, मगर निर्देशक ने उसे दिल्ली-मुम्बई की पृष्ठभूमि में सजाकर देसी अन्दाज़ में प्रस्तुत किया है । निर्देशक कॉलिन डी कुन्हा की यह कहानी आकाश से ज़मीन पर आने की तथा-कथा बताती है । इस तरह की काहनी अंग्रेजी और स्पेनिश सीरीज में काफी देखने को मिलती है। बे की विलासिता वाली दुनिया को दर्शाने के लिए वे एक ऐसी दुनिया रचते हैं, जो हमने देखी न हो, मगर उस दुनिया में ताक-झांक करना जरूर अच्छा लगता है।

वेबसिरीज़ की कहानी दिल्ली की एक धनाढ्य युवती बेला चौधरी बनाम ÷ बे ÷ (अनन्या पाण्डे) के आसपास बुनी गई है । उसकी माँ (मिनी माथुर) ने एक कमाल की प्लानिंग की है। इस प्लानिंग के अंतर्गत बे को एक अमीर घर में ऐशो-आराम की जिंदगी देना है। विलासिता में पली-बढ़ी बे भी जाने-माने बिजनेस टाइकून अगस्त्य चौधरी (विहान) के साथ संपन्नता की जिंदगी जीने के सपने देख रही है। पति अगस्त्य उसे समय नहीं देता, मगर बे को ट्रॉफी वाइफ बनने की ट्रेनिंग दी गई है (ऐसे दम्पती जिसमें पुरुष की उम्र ज्यादा हो लेकिन उसकी पत्नी युवा हो और जिसे मुख्य तौर पर सिर्फ सुन्दर दिखने कारण जीवनसाथी बनाया गया हो उसे ट्रॉफी वाईफ कहा जाता है । यह जुमला जिन महिलाओं के लिए इस्तेमाल होता है, उनके लिए आम राय ये होती है कि इनके पास शारीरिक आकर्षण के इतर कोई व्यक्तिगत योग्यता नहीं है।) ।अनन्या को इस सिरीज़ में यही भूमिका मिली है मगर उसकी माँ की प्लानिंग उस

वक्त धरी की धरी रह जाती है, जब अपने पर्सनल जिम ट्रेनर (वरुण सूद) के साथ वो अपने अंतरंग संबंधों के कारण पकड़ी जाती है।

इस गलती के कारण बे को घर से निकाल दिया जाता है और यहीं से बे की जिंदगी 360 डिग्री बदल जाती है। कल तक सुख-सुविधा में पली बे को दिल्ली की दौलत और शोहरत वाली जिंदगी को छोड़कर मुम्बई की गलियों में आना पड़ता है। रातों-रात वो अमीर से गरीब बन जाती है। अब शुरू होता है बे का खुद के अस्तित्व को तलाशने का सफर। बे का साथ कौन देगा? राजकुमारियों की तरह जिंदगी जीने वाली बे मुंबई में अपनी जमीन तलाश पाएगी या महज बे से बाई बनकर रह जाएगी ? इस सवाल का भी निर्माता -निर्देशक ने सुखद समाधान किया है ।निर्देशक कॉलिन डी कुन्हा की यह कहानी आकाश से ज़मीन पर आने की तथा-कथा बताती है । इस तरह की कहानी अंग्रेजी और स्पेनिश सीरीज में काफी देखने को मिलती है। बे की विलासिता वाली दुनिया को दर्शाने के लिए वे एक ऐसी दुनिया रचते हैं, जो हमने देखी न हो, मगर उस दुनिया में ताक-झांक करना जरूर अच्छा लगता है।

निर्देशक ने ऐशो-आराम की भव्यता को फैशनेबल ब्रांडेड कपड़ों, चमकीले सेट्स, लग्जरी कार और हेलिकॉप्टर से डेकोरेट किया गया है। सिरीज में कहानी के बाजय स्टाइल को ज्यादा अहमियत दी गई है और एपिसोड्स बढ़ने के साथ -साथ कहानी थोड़ी-सी प्रेडिक्टिबल भी हो जाती है। मुम्बई में %बे% के संघर्ष किसी पहाड़ की तरह न लग कर छोटे-मोटे स्तर के लगते हैं। यहां सिरीज थोड़ी धीमी हो जाती है। हालांकि ये सिरीज युवाओं को ध्यान में रख कर बुनी गई है, जिसमें आज की रिलेशनशिप, हार्ट ब्रेक और युवाओं के स्ट्रगल को दर्शाया गया है। हर एपिसोड का एंडिंग पॉइंट दिलचस्प है। सिरीज में सोशल मीडिया जर्नलिज्म को महिमामंडित करना ज़रुर खटकता है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है बे की भूमिका में अनन्या पांडे खूब खिली-खुली हैं ।अनन्या अपनी मासूमियत, चुलबुलाहट से मजेदार लगती हैं। उन्हें एक ऐसा चरित्र मिला है, जो उनकी इमेज से भी मेल खाता है। वरुण सूद और विहान के चरित्रों को और ज्यादा विकसित किया जाना चाहिए था। वे पर्दे पर कम दिखते हैं, मगर उन्होंने अच्छा काम किया है। वीर दास थोड़ा लाउड लगे हैं। बे की माँ गायत्री के रूप में मिनी माथुर अपनी भूमिकाओं में ऊर्जा लाती हैं। मुस्कान जाफरी और निहारिका लाइरा दत्त, सायरा अली और तमराह पवार ने दमदार अभिनय किया है। शो की निर्माता हरलीन के रूप में लिसा मिश्रा ने अच्छा प्रदर्शन किया है।

चाय वाले युवक को मादक पदार्थ बेचने वाला बताकर पुलिस ने की बेरहमी से पिटाई

●एसआई सस्पेंड, पुलिस अधीक्षक ने की तत्काल कार्यवाही

बैतूल/मुलताई। हाल ही में बस स्टैंड पर चाय नाश्ता बेचकर अपने परिवार का उदर पोषण करने वाले गरीब जरूरतमंद युवक को पुलिस ने मादक पदार्थ बेचने वाला युवक बताकर मुलताई थाने की खिड़की से हाथ बांधकर हाथो के बीच पाइप फसाकर बेरहमी से मारपीट की, जिसका वीडियो भी मने आया था। इसकी शिकायत पीड़ित युवक ने मानव अधिकार आयोग और पुलिस अधीक्षक से की थी, जिसके बाद पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया ने पिटाई करने वाले एसआई को निलंबित कर दिया गया है और इसके साथ ही मामले की जांच का जिम्मा राजपत्रित अधिकारी को सौंपा गया है।

एसपी ने दैनिक सुबह सवेरे संवाददाता को इस मामले में जानकारी देते हुए निलंबन की पुष्टि करते हुए कहा है कि मुलताई के एक युवक के साथ मारपीट का वीडियो संज्ञान में आया है

जिसमें एक युवक के साथ मारपीट होते दिखाई दे रही है घटनाक्रम में युवक अजय फरकाडे पिता मदन फरकाडे उम्र 22 वर्ष जाति निवासी-भगत सिंह वार्ड मुलताई से पूछताछ की गई, जिसके द्वारा यह घटना कारित करना बताया गया है उस अधिकारी को प्रथम दृष्टि निलंबित कर दिया गया है और राजपत्रित अधिकारी को मामले की जांच सौंपी गई है। उल्लेखनीय है कि बस स्टेंड पर चाय और नाश्ता बेचने वाले भगत सिंह वार्ड निवासी अजय फरकाड़े नाम के युवक को 18 सितंबर की रात्रि तकरीबन 12 बजे पुलिस द्वारा पकड़कर थाने लाया गया और उसे मादक पदार्थ बेचने के नाम पर खिड़की में हाथ बांध कर बेरहमी से मारा गया। युवक के थाने में खिड़की से बांधे रखे जाने का एक वीडियो भी सामने आया है जिसमे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं क युवक के हाथ रस्सियों से किस तरह से खिड़की से बांध कर रखे गए है और उसके हाथो में डंडा फसाया गया है। उक्त युवक ने इस घटना की शिकायत मानव अधिकार आयोग और पुलिस अधीक्षक से की थी, इसके बाद पुलिस अधीक्षक की यह प्रांरिभक कार्रवाई सामने आई है।

सुभाष वार्ड आंगनवाड़ी केन्द्र का निरीक्षण, खिलौने उपहार में मिलने से बच्चों में खुशी

सुबह सवेरे सोहागपुर

कार्यालय जिला पंचायत के निर्देशानुसार आज सुभाष वार्ड के आंगनवाड़ी केन्द्र का निरीक्षण खनिज अधिकारी दिवेश मरकाम नर्मदापुरम ने किया । इस अवसर पर उनके साथ प्रभारी कृष्णकांतसिंह, हेमंत राज आदि साथ थे। निरीक्षण के दौरान आपने आंगनवाड़ी केंद्र के संपूर्ण रिकार्ड रजिस्टर का निरीक्षण किया। संधारित रजिस्टर सभी अपडेट पाए गए । इसी क्रम में आपने आंगनबाड़ी केंद्र की गतिविधियों

के बारे में जानकारी ली । आंगनवाड़ी के टी एच आर वितरण की जानकारी लेकर गरम पका हुआ सांझा चूल्हा प्रदाय भोजन का भी निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आंगनबाड़ी केंद्र में करीबन 12 बच्चे भोजन करते उपस्थित थे।किचन गार्डन एवं भवन का निरीक्षण किया ।अधिकारियों ने आंगनवाड़ी केन्द्र की प्रशंसा की गई । आंगनबाड़ी केंद्र में खिलौने नहीं होने की बात संज्ञान में आने पर अधिकारियों ने बच्चों को खिलौने के अलावा अध्ययन के लिए वर्णमाला आदि उपहार स्वरूप भेंट किए। अधिकारी द्वय ने आंगनबाड़ी भवन की मरम्मत कराने का आश्वासन भी दिया । वहीं आंगनबाड़ी केंद्र संचालन एवं रजिस्टर रिकॉर्ड संधारण की प्रशंसा की गई । सुमित्रा देवी ने समस्त अधिकारियों का आभार व्यक्त किया इस अवसर पर सेक्टर सुपरवाइजर श्रीमती रितु मेहरा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुमित्रा देवी अहिरवार, सहायिका ललिता अहिरवार सहित वार्ड की महिलाएं एवं बच्चे उपस्थित थे।

सोहागपुर थाने के अंतर्गत निजी स्कूलों के कैमरे कर्मचारियों के वेरीफिकेशन के साथ सुझाव दिए

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

प्रदेश सरकार की मंशा अनुसार पुलिस अधीक्षक गुरुकरणसिंह के निर्देश पर एसडीओ पुलिस संजू चौहान एवं नगर निरीक्षक कंचनसिंह ने सोहागपुर थाने की टीम बनाकर निजी स्कूलों के टीचर एवं

कर्मचारियों का वेरिफिकेशन किया गया। वहीं निजी एवं सरकारी स्कूलों के कैमरे एवं सुरक्षा गार्ड चेक किए गए।नगर निरीक्षक कंचनसिंह ने बताया कि समस्त शालाओं के प्राचार्य एवं संचालकों को सुरक्षा संबंधी सुझाव दिए गए । इसी क्रम में सट्टा एक्ट की कार्रवाई की गई। अपराध क्रमांक 534/24 धारा 4 (क) सट्टा अधिनियम में आरोपी सूरज रघुवंशी पिता देवी सिंह रघुवंशी निवासी हनुमान मंदिर के पास रघुवंशीपुरा सोहागपुर से एक सट्टा अंक लिखी गड्डी,कार्बन का टुकड़ा एवं नगदी राशि जप्त की गई । इसी के साथ अपराध क्रमांक 535/24 धारा 4 (क) सट्टा अधिनियम में आरोपी धनराज रघुवंशी पिता भूरा रघुवंशी निवासी रघुवंशीपुरा सोहागपुर के से एक सट्टा अंक लिखी पर्ची एक कार्बन एवं नगदी रुपए जप्त किए गए।

क्रिकेट खेलने के विवाद में युवक को अधमरा करते तक पीटा, पुलिस ने शुरू की पड़ताल

बैतूल। तहसील घोड़ाडोंगरी के बांसपुर गांव में क्रिकेट खेलने के दौरान हुए विवाद में एक युवक की दो अन्य युवकों ने पिटाई कर दी। घायल युवक को घोड़ाडोंगरी अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिलहाल उसका इलाज चल रहा है। सूचना मिलने पर शुक्रवार रात करीब 10 बजे घोड़ाडोंगरी पुलिस अस्पताल पहूंची और घायल युवक के बयान लेकर मामले की जांच शुरू कर दी। घोड़ाडोंगरी पुलिस चौकी के एएसआई संत कुमार परतेती ने बताया कि बांसपुर गांव में क्रिकेट खेलने के दौरान यहीं के रहने वाले राकेश अखण्डे के साथ दो लड़कों ने मारपीट की है। क्रिकेट खेलने के दौरान दूसरी पारी में राकेश के कैच आउट होने के बाद घर जाने लगा, इसी बात पर दूसरी टीम के खिलाड़ियों द्वारा राकेश से कहा गया मैच छोड़कर क्यों भाग रहे हो और गाली गलौज करने लगे। जिस पर राकेश ने गाली गलौज देने से मना किया तो दो लड़कों ने राकेश के साथ जमकर मारपीट की। वायरल हो रहे वीडियो में युवक को अधमरी हालत में खून से लथपथ होकर जमीन पर देखा जा रहा है।

सीपीआर प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

बैतूल। आज शनिवार 21 सितंबर को शहर के प्रसिद्ध लश्करे हॉस्पिटल एवं साई आरोग्यम फिजियोथेरेपी क्लिनिक पर निशुल्क सीपीआर ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनाइटेड हेल्थ वर्कर्स वेलफेयर एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष प्रसिद्ध फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. संदीप परिहार ने बताया कि वर्तमान समय में हार्ट अटैक की बीमारी आम बात हो गई है क्योंकि बुर्जुगों से लेकर युवा एवं किशोर उम्र के बच्चें भी लगातार इससे पीड़ित मिल रहें है। इस विषम परिस्थिति में हम किसी की जान कैसे बचा पाएंगे, यह ट्रेनिंग ऐसी विषम परिस्थितियों में बहुत मायने रखती है। हमारी संस्था ऐसी विपरीत परिस्थिति में किसी की जान बचाने हेतु सीपीआर की ट्रेनिंग पूरे जिले में दे रही है। यूनाइटेड हेल्थ वर्कर्स वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के द्वारा आज जिले के साई आरोग्यम फिजियोथेरेपी क्लिनिक के साथ ही लश्करे हॉस्पिटल में इस निशुल्क ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से यूनाइटेड हेल्थ वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संभाग अध्यक्ष डॉ. योगेश पवार, जिलाध्यक्ष फिजियोथेरेपिस्ट डॉ संदीप परिहार, फिजियोथेरेपिस्ट सूरज वागद्रे एवं उनकी टीम के सदस्यगण शामिल थे। प्रसिद्ध फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. संदीप परिहार ने बताया कि हमारी टीम द्वारा ये कार्य पूरे बैतूल जिले में लगातार किया जा रहा है। जिसमें जिले के कई स्कूलों में इस ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया जा चुका है। हमारा मानना है कि इस प्रक्रिया के द्वारा हम कहीं भी, कभी भी किसी व्यक्ति को अचानक हार्ट अटैक आने पर उसकी जान बचा सकते है, साथ ही हमारा लक्ष्य है कि सभी संस्थानों में इस ट्रेनिंग के द्वारा लोगो को जागरूक करना, जिससे किसी व्यक्ति को हॉर्ट टेक या कार्डियक अरेस्ट आए, तो हम उनका जीवन कैसे बचाएं। हम इस ट्रेनिंग प्रोग्राम को यूनाइटेड हेल्थ वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के बैनर तले पूरे जिले में जगहजगह कर रहे है और इस प्रोग्राम को सुचारू रूप से चलाने मेंयूनाइटेड हेल्थ वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के डॉ योगेश पवार, एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ संदीप परिहार, सूरज वागद्रे, सचिन धाकड़ एवं उनकी पूरी टीम जिले में सतत रूप से कार्य कर रही है। उन्होंने अपील की हैं क जो भी संस्थाएं, स्कूलों, कॉलेजों, शासकीय दफ्तरों में इस प्रोग्राम को करवाना चाहती है वे हमारी संस्था से संपर्क कर सकती है।

जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर ने पट्टन के ग्रामों में प्रस्फुटन समिति के कार्यों का अवलोकन

बैतूल- जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर एवं संभाग समन्वयक कौशलेश तिवारी ने शनिवार को मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद प्रभात पट्टन के ग्रामों में प्रस्फुटन समिति के कार्यों का अवलोकन किया। जिला समन्वयक प्रिया चौधरी ने बताया कि ग्राम वायगांव में आयोजित प्रस्फुटन समिति की बैठक में समिति द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन समिति के अध्यक्ष द्वारा किया गया। इसके बाद प्रस्फुटन वाटिका का अवलोकन कर ग्राम की पंच पांडव पहाड़ी पर लगभग 200 पौधों का रोपण किया गया। इस दौरान उपाध्यक्ष श्री नागर द्वारा पीपल के पौधे का रोपण किया। इसके अलावा श्री नागर ने शेरगढ़ किला पौधरोपण का अवलोकन किया एवं समरसता भोज में शामिल हुए। इस दौरान विधायक मुलताई श्री चंद्रशेखर देशमुख भी उपस्थित थे। श्री नागर ने ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति बिरौली झिल्पा में प्रस्फुटन वाटिका का अवलोकन भी किया गया।

विप्र प्रतिभा सम्मान का होगा आयोजन

समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान करेगा ब्राह्मण समाज

बैतूल। जिले के ब्राह्मण समाज के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को जल्द ही सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही समाज में सक्रिय प्रतिभावान लोगों को भी सम्मानित किया जाएगा। यह निर्णय ब्राह्मण समाज के सभी संगठनों की सामूहिक बैठक में लिया गया। यह बैठक शुक्रवार की शाम दत्त मंदिर सिविल लाइन में आयोजित की गई थी। इस संबंध में बैठक के संयोजक पंडित कांतु दीक्षित ने बताया कि दत्तात्रेय भगवान और परशुराम भगवान के पूजन के साथ बैठक आरंभ हुई। इसमें ब्राह्मण समाज के अग्रज पंडित नरेंद्र शुक्ला और ब्रजकिशोर पांडे ने आगामी नवंबर माह की 10 तारीख को समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा। इसमें वर्ष 2024 में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक लाने वाले सभी प्रतिभावानों को सम्मानित मेडल और प्रमाणपत्र से सम्मानित किया जाएगा। जिस तरह परशुराम सेना ने 2017 में

सभी को बढ़ते कदम अवार्ड से सम्मानित किया था। ठीक उसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इसमें समाज के ऐसे लोगों को भी सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कोई उपलब्धि हासिल की है। समाज के सभी लोगों से यह अपील की है कि वे आगामी 25 सितंबर से 10 अक्टूबर तक ऐसे प्रतिभावान लोगों की जानकारी पंडित प्रमोद शर्मा (9425002656) तक अवश्य पहुंचा दें। इसके बाद पंडित कांतु दीक्षित के नेतृत्व में गठित 10 सदस्यीय पैनल के द्वारा उसका परीक्षण कर अंतिम चयन किया जाएगा। बैठक में सभी महिलाओं और पुरुषों ने अपने सुझाव रखें। बैठक का संचालन पंडित सुनील द्विवेदी और तूलिका पचौरी ने किया। बैठक में पप्पन मिश्रा, रितेश शुक्ला, रीना शुक्ला, प्रेरणा शर्मा, नंदिनी तिवारी, प्राची दुबे, नीतू विवेक भार्गव, श्रीमती तरूणा द्विवेदी, निमिषा शुक्ला, राकेश शर्मा, कुणाल शर्मा, मनीष मिसर, आशुतोष शुक्ला, अनुराग मिश्रा, श्याम पांडे, कार्तिक मिश्रा, प्रमोद मिश्रा, धीरू शर्मा, शैलेश गुबरेले, ओम द्विवेदी, पवन शर्मा, हिमांशु पाठक, अजय शुक्ला, प्रशांत मांडवीकर, समर्थ तिवारी, पीयूष तिवारी, राजेश अवस्थी, संजय (पप्पी) शुक्ला आदि उपस्थित थे।

गढ़ा टोल नाके पर टोलकर्मियों की गुंडागर्दी, यात्री बस चालक-परिचालक के साथ की मारपीट

संचालकों ने चिचोली मार्ग पर बस संचालन रोकने की चेतावनी दी

बैतूल। बंसल कम्पनी के गढ़ा स्थित टोल नाके पर टोल कर्मियों की दबंगई और गुंडा गर्दी की घटना सामने आई है। गुरुवार की शाम टोल नाके पर एक यात्री बस के चालक और परिचालक की किस बर्बरता से पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में स्पष्ट नजर आ रहा है कि करीब आधा दर्जन टोलकर्मियों ने बस चालक और परिचालक की किस तरह से पिटाई की। घटना को लेकर लक्ष्मी नारायण बस सर्विस के संचालक मोनू आर्य ने बताया कि रोजाना इस सड़क से बसों का आना-जाना लगा रहता है। इस वजह से टोल नाके पर प्रतिमाह निर्धारित राशि जमा कर दी जाती है। टोल की राशि एक साथ जमा करने पर बस चालकों को सुविधा दी गई है। कल भी यहां यही स्थिति दिखाई देने पर बस साइड लाइन से निकाली जा रही थी। इसी बीच टोल पर खड़े 5 से 6 कर्मचारियों ने लाइन से ना आने को लेकर

हेल्पर विजय इवने से विवाद करना शुरू कर दिया। बीच-बचाव के लिए आए कंडक्टर पप्पू के साथ मारपीट शुरू की। करीब 5 से 6 कर्मचारियों ने मिलकर दोनों कर्मचारियों को पीटना शुरू कर दिया। जबकि टोल की राशि बिना किसी विवाद के पूरी ईमानदारी से जमा की जा रही है। बावजूद इसके मारपीट की घटना को अंजाम देना कहीं से कहीं तक ठीक नहीं है। बस यूनियन के मोनू आर्य ने हेल्पर विजय इवने के साथ मारपीट करने वालों के खिलाफ एट्रोसिटी नहीं लगाने पर चेतावनी दी है कि कार्रवाई नहीं हुई तो चिचोली जाने वाली बसों का संचालन रोक दिया जाएगा।

पुलिस ने नहीं लगाई एट्रोसिटी एक्ट की धारा

घटना को लेकर मोनू आर्य ने चिचोली पुलिस की कार्यवाही को लेकर भी सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने बताया कि कर्मचारियों से किस बर्बरता के साथ मारपीट की जा रही है इसका सबूत विडिओ में साफ दिखाई दे रहा है। हेल्पर विजय इवने आदिवासी समाज से ताल्लुक रखता है। जिसको बेरहमी से पीटा गया, लेकिन बावजूद इसके पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एट्रोसिटी एक्ट की धाराएं नहीं लगाई। इसके लिए ए.एस?.पी. से चर्चा की गई है। यदि आरोपियों पर नियमानुसार कार्यवाही नहीं की जाती है तो चिचोली रूट की सभी यात्री बसों का संचालन रोक दिया जाएगा।

छात्रावास के बाथरूम के करीब सीसीटीवी कैमरे लगने से बवाल

छात्राओं की शिकायत के बाद अधीक्षिका और पुरुष भृत्य को हटाया, एसडीएम करेंगे जांच

बैतूल। आदिवासी अंचल भैंसदेही के महाराष्ट्र से सटे थपोड़ा के कन्या छात्रावास के वाशरूम की तरफ कैमरे लगाए जाने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। छात्रावास की छात्राएं अपने पालकों के साथ शुक्रवार को दोपहर बाद भैंसदेही पहुंचकर क्षैत्रीय विधायक महेंद्र सिंह चौहान समेत अधिकारियों को अधीक्षिका की इस करतूत से अवगत कराया। इसके बाद आनन-फानन में अधिकारियों की टीम थपोड़ा रवाना हुई। प्रारंभिक जांच में कैमरा वाशरूम की जगह कारिडोर में लगा होना पाया गया। इसके बाद अधीक्षिका लक्ष्मी इवने और पुरूष भृत्य पवार को तत्काल हटा दिया गया है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक कन्या आश्रम थपोड़ा की करीब तीन दर्जन से अधिक छात्राएं अपने पालकों के साथ शुक्रवार को भैंसदेही पहुंची। पहले यह मामला किसी के समझ में नही आया कि छात्राएं बड़ी संख्या में वाहनों से एसडीएम शैलेंद्र हनोतिया और बीईओ के कार्यालय कैसे पहुंची। जब छात्राओं ने अपने परिजनों के साथ थपोड़ा छात्रावास की पोल खोली तो सभी के होश उड़ गए। दरअसल छात्राओं का आरोप था कि छात्रावास में अधीक्षिका लक्ष्मी इवने द्वारा वॉशरूम की ओर लगाए गए सारे कैमरे हमेशा चालू रहता है। चूंकि अधीक्षिका कई बार शराब के नशे में रहती, इसलिए कैमरे चालू रहने से उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती है। छात्राओं ने अपनी शिकायत में यह भी बताया कि अधीक्षिका का पुत्र भी कन्या छात्रावास होने के बावजूद बेरोकटोक यहां आता जाता हैं। छात्राओं ने दूसरा आरोप लगाया कि यहां का पुरूष भृत्य दिलीप पवार उन्हें वाशरूम में नहाते हुए चुपके से देखता है। इससे उन्हें कई दिनों से उन्हें परेशानियां हो रही है।

शिकायत के बाद अधिकारियों की थपाड़ा दौड़ पूरे मामले की गंभीरता इस बात से लगाया जा सकता है कि एसडीएम और बीईओ खुद छात्राओं की शिकायत और महेंद्र सिंह चौहान की नाराजगी के बाद तुरंत थपोड़ा पहुंच गए। उन्होंने यहां छात्राओं से भी चर्चा की। इस दौरान

छात्राएं अपने आरोपों पर कायम रही। हालांकि एसडीएम को बाथरूम के अंदर कोई कैमरे नहीं मिले, लेकिन कॉरिडोर में जरूर कैमरे लगने की बात सामने आई है। छात्राओं के आरोप के बाद तत्काल बाथरूम की ओर लगे कैमरे हटा दिए गए हैं। शराब पीने के गंभीर आरोप और पुरुष भृत्य दिलीप पवार की लापरवाही पर दोनों को सहायक आयुक्त ने हटाने के निर्देश दिए। एसडीएम के निर्देश पर दोनों को छात्रावास से हटा दिया गया है।

सवालों के घेरे में छात्रावास में लगे कैमरे

भले ही अधिकारी कह रहे हो कि सुरक्षा के लिए छात्रावास में कैमरे लगाए है, लेकिन छात्राओं के आरोप इसलिए सही कहे जा सकते हैं कि वाशरूम की ओर दो कैमरे लगाकर अधीक्षिका क्या संदेश देना चाह रही थी। दूसरा सवाल यह खड़ा हो रहा है कि छात्रावास में पुरूष भृत्य लंबे समय से अधीक्षिका ने कैसे रखा। शासन की गाइडलाइन के अनुसार यहां पुरुष भृत्य रखने का प्रावधान नहीं था। दूसरी ओर कैमरे लगे हैं तो अधीक्षिका पुत्र बेरोक-टोक आने पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं की गई। एक और लापरवाही सामने आई है कि सीसीटीवी कैमरे क्लास रूम, कार्यालय के महत्वपूर्ण स्थानों पर लगाए जाने की जगह वॉशरूम और बाथरूम की ओर लगाए गए। छात्राओं के पालकों ने भी छात्रावास की इस तरह की गतिविधियों पर सवाल खड़े किए हैं। हालांकि जांच के बाद ही मामले में और तथ्य सामने आ सकते हैं।

इनका कहना: यह समाचार पूर्णत- गलत, भ्रामक एवं असत्य है। सहायक आयुक्त शिल्पा जैन ने बताया कि इस मामले की जांच की गई, तो जांच के दौरान पाया गया कि संस्था में ऐसी कोई घटना नहीं हुई है, जिसका प्रभाव छात्राओं के सम्मान पर पड़ा हो। छात्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से संस्था के बरामदे में लगे कैमरों की दूरी बाथरूम से 20 मीटर है और वह बाथरूम विंग को कव्हर करते हैं न कि बाथरूम को। शासकीय कन्या आश्रम शाला, थपोड़ा भवन में स्थापित कैमरों की लिंक किसी भी मोबाइल पर नहीं दी गई है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में शासकीय कन्या आश्रम शाला थपोड़ा में छात्रावास अधीक्षिका के पद पर श्रीमती उषा दहीकर प्राथमिक शिक्षक पदस्थ हैं। पूर्व में भी संस्था में महिला अधीक्षिका ही पदस्थ रहीं हैं। किसी व्यक्ति द्वारा संस्था के संबंध में दुष्प्रचार किया गया है, जिसकी सूक्ष्मता से जांच की जा रही है।

-- शिल्पा जैन, सहायक आयुक्त, अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण विभाग

गोविंदा की पत्नी ने एक पॉडकास्ट में अपने जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि वे पंजाबी है, उनके ससुराल में बहुत पूजा पाठ होती थी। गोविंदा के पति का करियर उनकी माँ के पूजा-पाठ का पुण्य का परिणाम है। लेकिन, उन्होंने बचपन में वाइन पीने की लालच में ईसाई धर्म अपना लिया और इस बारे में किसी को जानकारी भी नहीं होने दी।

वाइन पीने के लिए गोविंदा की पत्नी ईसाई बनी

निगोविंदा की पत्नी सुनीता आहूजा इन दिनों चर्चा में है। कहा गया कि उन्हें टीवी के पॉपुलर रियलिटी शो 'बिग बॉस' के 18वें सीजन में बुलाया गया है। हालांकि उन्होंने शो का ऑफर ठुकरा दिया। सुनीता ने यह भी बताया कि उन्हें पिछले 4 साल से शो का ऑफर मिल रहा है, लेकिन वो कभी भी इस शो का हिस्सा नहीं बनेंगी।

उनसे इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मुझे पैसे की इतनी मारा-मारी नहीं है। मैं वो शो भी नहीं देखती, मुझे पसंद नहीं है। रात के 10 बजे तक कौन जागेगा, मेरा सुबह उठने का टाइम होता है। मेरे पास वे लोग दो बार आए थे। अभी भी जो बिग बॉस शुरू हो रहा है, उसके लिए भी मुझे और टीना (गोविंदा की बेटी) को बुला रहे थे। मैंने कहा पागल हो क्या तुम लोग, बोल किसको रहे हो। वो लोग मुझे सलमान खान के साथ एंकरिंग के लिए बताएं, मैं कर लूंगी।

वे हाल में एक पॉडकास्ट में नजर आईं। इस पॉडकास्ट में उन्होंने जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर बात की। इस दौरान उन्होंने यहाँ तक बताया कि वे पंजाबी परिवार से आती हैं, ससुराल में उनके बहुत पूजा पाठ होती थी। लेकिन, उन्होंने बचपन में वाइन पीने की लालच में ईसाई धर्म अपना लिया और इस बारे में किसी को जानकारी भी नहीं होने दी।

'टाइम आउट विद अंकित' शो में सुनीता आहूजा यह बताती दिखी कि उन्होंने अपनी पढ़ाई एक ईसाई स्कूल में की। उनके दोस्त ईसाई थे जो वाईन पीते थे। वाइन पीने के लालच में उन्होंने एक दिन अपने माता-पिता को बताए बिना चुपके से ईसाई धर्म अपना लिया। सुनीता

आहूजा ने पॉडकास्ट में बताया कि मेरा जन्म बांद्रा में हुआ। मैं एक ईसाई स्कूल में थी और मेरे सभी दोस्त ईसाई थे। मैंने सोचा कि वाइन का मतलब है शराब। मैं

हमेशा बहुत चालाक थी। शराब पीने में कोई बुराई नहीं है, बस थोड़ी सी शराब पीने के लिए मैंने खुद को ईसाई बना दिया।

उन्होने बताया कि वो आजतक ईसाई धर्म का पालन करती हैं। शनिवार को चर्चा में जाती हैं। इसके अलावा उन्होंने दरगाह, गुरुद्वारे और मंदिर जाने की बात भी बताई। आगे सुनीता से जब पूछा गया कि क्या वो अपने पति के लिए लेडी लक थीं तो सुनीता ने जवाब दिया कि गोविंदा जो हीरो बने वो अपने माँ की पूजा-पाठ से बने। माँ इतना गायत्री मंत्र का जाप करती थीं। गोविंदा घर के छोटे थे और उनकी मां उनके लिए बहुत कुछ करती थीं।

आगे सुनीता आहूजा ने इस शो में ये भी बताया कि उन्हें दारू पीने का शौक है। वो कहती हैं कि गोविंदा इतना शौकीन नहीं है, लेकिन उन्हें बहुत है। जब तक गोविंदा एक बीयर पीते हैं तब तक वो 4 पी जाती हैं। उन्होंने कहा कि वो और उनका बेटा पार्टी करने के लिए घर पर शराब पी लेते हैं। उनका कहना है कि वो लोग शराब पीने बाहर इसलिए भी नहीं जाते क्योंकि आजकल लोग हर मूमेंट रिकॉर्ड करने लगते हैं। फिर तरह-तरह की बातें होती हैं। इससे बढ़िया तो यही है कि घर में बैठकर दारू पियो। घर में एक दूसरे को गाली दे दो, बाहर बवाल ही न हो।

सुनीता और गोविंदा की शादी 1987 में हुई थी। एक साल से ज्यादा टाइम तक दोनों ने अपने रिश्ते को छुपाए रखा। हालांकि बाद में बेटी टीना के होने के बाद रिश्ता खुल गया। गोविंदा को जहाँ इंडस्ट्री में शर्मीला स्वभाव का जाना जाता है वहीं उनकी पत्नी सुनीता आहूजा अक्सर मुखर होकर बात करते दिखती हैं। इस पॉडकास्ट में भी उन्होंने इसी तरह बात की है। चाहे फिर वो अपनी शादी को लेकर हो या फिर गोविंदा की फैन फॉलोइंग से उनपर क्या असर पड़ता था उस पर।

आलिया भट्ट ने भाई के लिए दिखाया 'जिगरा'

एक्ट्रेस आलिया भट्ट का एक्टिंग करियर 10 साल से ज्यादा का हो गया। उन्होंने कई बेहतरीन फिल्मों में काम किया है। आलिया भट्ट की जबरदस्त एक्टिंग देखने के लिए उनके तमाम चाहने वाले उतावले रहते हैं। एक बार फिर फैंस की इच्छा पूरी होने वाली है। क्योंकि, आलिया भट्ट की फिल्म 'जिगरा' अगले महीने यानी अक्टूबर में रिलीज हो रही है। मेकर्स ने आलिया भट्ट की फिल्म 'जिगरा' का टीजर ट्रेलर रविवार को रिलीज कर दिया जो पसंद किया जा रहा है। फिल्म 'जिगरा' का टीजर ट्रेलर देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि आलिया भट्ट जबरदस्त एक्शन अवतार में नजर आने वाली हैं। आलिया भट्ट की फिल्में लोगों को जमकर एंटरटेन करती हैं। आलिया भट्ट एक बार फिर फिल्म 'जिगरा' के जरिए लोगों का मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं। फिल्म 'जिगरा' का टीजर ट्रेलर रिलीज कर दिया गया। फिल्म के ट्रेलर में देखा जा सकता है कि आलिया भट्ट अपने भाई (वेदांत रैना) को बचाने के लिए स्ट्रगल करती नजर आ रही हैं। इसके लिए उनका एक्शन अंदाज देखने को मिल रहा। जेल में बंद भाई के लिए बहन हाथों में हथियार उठा लेती है और आग से भी खेल जाती है। इससे पता चलता है कि फिल्म 'जिगरा' में आलिया भट्ट का धांसू एक्शन अवतार देखने को मिलेगा और इसके साथ ही उनका किरदार काफी इमोशन भी नजर आएगा। वसन वाला के डायरेक्शन में बनने वाली आलिया भट्ट और वेदांग रैना की फिल्म 'जिगरा' 11 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। फिल्म मनोज पाहवा भी महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आने वाले हैं। फिल्म 'जिगरा' को आलिया भट्ट ने करण जौहर के साथ मिलकर प्रोड्यूस किया है।

रियल बॉक्स

ये फ़िल्में 'स्त्री-2' के हिट होने की पायदान बनी

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

जब भी कोई फिल्म बनती है, उसके फिल्मकारों की चाह होती है कि उनकी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफलता के झंडे गाड़े। कुछ फ़िल्में ये कारनामा कर भी देती हैं। लेकिन, हर फिल्मकार की चाह पूरी नहीं होती। कई बार तो अप्रत्याशित रूप कुछ ऐसी फ़िल्में जरूर प्रदर्शित होती हैं, जो सफलता का रिकॉर्ड बनाकर चौंका देती है। फिल्म इतिहास में ऐसी कई फ़िल्में हैं, जो दर्शकों की पसंद पर खरी उतरी, पर उनकी संख्या सीमित है। यह बात आज के संदर्भ में की जाए तो 'स्त्री-2' ने वास्तव में चौंकाने वाला काम किया। इस फिल्म ने बिना बड़े सितारों, बिना एक्शन और बगैर धमाकेदार कहानी के कमाई का जो रिकॉर्ड बनाया वो अद्भुत ही कहा जाएगा। जब पठान, जवान, गदर-2' और 'एनिमल' ने 500 करोड़ का आंकड़ा पार किया, तो लगा था कि कुछ सालों तक ये रिकॉर्ड शायद ही कोई फिल्म तोड़ सकेगी। लेकिन, 'स्त्री-2' ने इससे आगे छलांग लगा ली। तेलुगू में बनी 'बाहुबली-2' ने 2017 में 511 करोड़ रुपए की कमाई करके सबसे बड़ी हिंदी फिल्म का गौरव बनाया था। इस रिकॉर्ड को तोड़ने में 6 साल लगे। शाहरुख खान की फिल्म 'पठान' ने ये रिकॉर्ड तोड़ा। इसके बाद उनकी अगली फिल्म 'जवान' ने भी सबसे बड़ी हिंदी फिल्म होने का रिकॉर्ड बनाया। इसके बाद दो

और धमाके 'गदर 2' और 'एनिमल' ने किए और हिंदी में 500 करोड़ का आंकड़ा पार किया। मगर 'स्त्री-2' ने सबको पीछे छोड़ दिया।

एक बात यह भी कि 'जवान' ने 584 करोड़ कमाने में 5 सप्ताह का समय लिया। लेकिन, 'स्त्री-2' को 586 करोड़ तक पहुंचने में सिर्फ 34 लगे। अभी तक कोई भी हिंदी फिल्म भारत में 600 करोड़ का कलेक्शन नहीं कर पाई है। मगर, 'स्त्री-2' यह कमाल कर लेगी। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में बड़ी कमाई की गारंटी एक्शन-ड्रामा फिल्मों को माना जाता रहा है। 500 करोड़ कमाने वाली फिल्में पठान, जवान, गदर-2 और 'एनिमल' थी और ये सभी एक्शन फ़िल्में रहीं। लेकिन, अब एक हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'स्त्री 2' ने ऊंचाई हासिल की और 600 करोड़ पार करने के मुहाने पर है। जबकि, इस फिल्म ने वर्ल्ड वाइड 798.75 करोड़ रुपए का कलेक्शन कर लिया। सच ये भी है कि यह फिल्म 50 करोड़ के बजट में बनी है। फिल्म के कलाकार राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर इतने बड़े सितारे भी नहीं हैं कि कोई उनकी वजह से फिल्म देखने जाए। 'स्त्री-2' हिंदी की नंबर वन फिल्म बन गई, जिसने शाहरुख़ की 'जवान' के साथ सलमान खान की 'टाइगर' को भी मात दे दी। कहा जाता है कि दुनिया में स्त्री चाहे तो कुछ भी कर सकती है। उसके सामने कई बड़े-बड़े दिग्गज धराशाई हो जाते हैं। यह बात फिल्मों की सफलता पर भी लागू होती है। 'स्त्री-2' ने भी यही चमत्कार किया। यह हिंदी की ऑल टाइम हिट फिल्म बन गई। मध्यप्रदेश के संदर्भ में इस फिल्म का महत्व यह है कि इसके पहले पार्ट 'स्त्री' की शूटिंग भी चंदेरी में हुई थी और दूसरा पार्ट 'स्त्री-2' भी यहीं बना।

हिंदी फिल्मों में कमाई वाली हिट फिल्मों में आमिर खान की 'गजनी' पहली ऐसी फिल्म थी, जिसने 100 करोड़ की कमाई की। जबकि, पहली हिट फिल्म का जिक्र किया जाए, तो 1969 में आई राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर की 'आराधना' पहली ऐसी फिल्म थी, जो 100 दिनों तक सिनेमाघरों में चली। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त किए थे। इससे पहले साल 1965 में आई 'वक्त' को भी हिट फिल्मों में गिना जाता है। फिल्म का बजट 1 करोड़ रुपए था, जबकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने 6 करोड़ का वर्ल्डवाइड कलेक्शन किया था। 1949 में आई फिल्म 'महल' ने भी कामयाबी के झंडे गाड़े थे। अशोक कुमार और मधुबाला की इस फिल्म को पहली हॉरर फिल्म कहा जाता है। 'अंदाज' को दिलीप कुमार की सुपरहिट फिल्मों में गिना जाता है। फिल्म में राज कपूर, नरगिस और दिलीप कुमार थे। लेकिन, इसके बाद राज कपूर और दिलीप कुमार ने कभी साथ काम नहीं किया। भारत भूषण और मीना कुमारी अभिनीत फिल्म 'बैजू बावरा' अपने जमाने में सुपरहिट थी।

हिट फिल्मों की फेहरिस्त में दिलीप कुमार की 'देवदास' भी है। इस ट्रैजिक लव स्टोरी ने रिलीज होने

के साथ ही बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचाया था। देव आनंद को रातों रात सितारा बनाने वाली फिल्म 'सीआईडी' को भी नहीं भुलाया जा सकता। प्रेम त्रिकोण पर आधारित हिट फिल्म 'संगम' विदेशी धरती पर शूट की जाने वाली पहली हिंदी फिल्म थी। ये उस वक्त की सबसे लंबी फिल्म भी थी, क्योंकि इसकी लंबाई 230 मिनट यानी करीब चार घंटे थी। फिल्म इतिहास में 'मदर इंडिया' का नाम इज्जत के साथ लिया जाता है। एक सशक्त मां के किरदार में नरगिस ने इस किरदार को अमर कर दिया था। इस फिल्म के दौरान ही सुनील दत्त और नरगिस में प्रेम हुआ था। खास बात ये कि इस फिल्म की कोई नक़ल नहीं कर सका। इसी तरह गुरुदत्त की अमर फिल्म 'प्यासा' भी ट्रैजिक लव स्टोरी थी। इसे यथार्थवादी सिनेमा में मील का पत्थर कहा जाता है। इसे दुनिया की श्रेष्ठ फिल्मों का तमगा हासिल है। 'मुगले आजम' भी अपने समय काल की सबसे महंगी और सुपरहिट साबित हुई थी। दिलीप कुमार को सुपरस्टार बनाने वाली इस फिल्म को पूरा करने में 16 साल लगे थे। 'नया दौर' फिल्म में भी दिलीप कुमार ने अपने रोल से देशभर में जोश जगा दिया था। राज कपूर को सुपरहिट बनाने वाली फिल्म 'आवारा' ने देश और विदेश में भी धूम मचाई थी। राज कपूर और नरगिस की ही सुपरहिट फिल्म 'श्री 420' भी हिट और यादगार फिल्मों में है। इस फिल्म के एक गाने में ऋषि कपूर पहली बार स्क्रीन पर दिखाई दिए थे।

मनोज कुमार को देशभक्त की तरह स्थापित करने वाली फिल्म 'उपकार' 1967 में आई थी। इस फिल्म ने छह फिल्मफेयर और तीन नेशनल अवार्ड जीते। कहते हैं कि उस वक्त के पीएम लाल बहादुर शास्त्री की सलाह पर मनोज कुमार ने ये फिल्म बनाई थी। इसी तरह अमिताभ बच्चन को स्थापित करने वाली फिल्म थी 'जंजीर' जिसके जरिए अमिताभ को एंग्री यंग मैन का तमगा मिला था। ऋषि कपूर के डेब्यू और उन्हें पहली ही फिल्म के जरिए सुपर स्टार बनाने फिल्म का श्रेय 'बॉबी' को दिया जाता है। इस फिल्म के दौरान ही डिंपल कपाड़िया ने राजेश खन्ना से शादी कर ली थी। इस फिल्म की सफलता ने नया रिकॉर्ड बनाया था। राजश्री को अलग तरह की फिल्मों के लिए याद किया जाता है। 'मैने प्यार किया' ऐसी ही फिल्म थी जिसने मारधाड़ की फिल्मों से ऊब चुके दर्शकों को ये प्रेम कहानी परोसी, जिसने सफलता के झंडे गाड़े थे। इस फिल्म से दर्शकों ने सलमान खान को पहचाना था। राजश्री की ही 'हम आपके हैं कौन' सौ करोड़ कमाने वाली देश की पहली फिल्म बनी थी। माधुरी दीक्षित और सलमान खान की ये फिल्म आज भी पसंद की जाती है।

रेखा को सुपरस्टार बनाने वाली फिल्म 'उमराव जान' ने उन्हें पहला नेशनल अवॉर्ड दिलाया। ये फिल्म रेखा ने अपनी मां के कहने पर की थी और इसके लिए कोई फीस भी नहीं ली। इसी तरह 'कटी पतंग' वो फिल्म थी जिसने राजेश खन्ना को सुपरस्टार बनाया।

इस फिल्म में विधवा का रोल निभाने के लिए कई अभिनेत्रियों ने इनकार कर दिया था, तब आशा पारेख को फाइनल किया गया। उन्हें इसी उस साल फिल्मफेयर का बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड भी मिला। अलग तरह की फिल्मों में ऋषि कपूर और पद्मिनी कोल्हापुरे की फिल्म 'प्रेम रोग' को गिना जाता है, जो अपने समय की हिट फिल्मों में एक थी। अलग जॉनर कॉमेडी ने कई सुपरहिट फ़िल्में दी। ऐसी कॉमेडी फिल्मों में 'गोलमाल' का नाम सबसे ऊपर है। अमोल पालेकर और उत्पल दत्त की जबरदस्त कॉमेडी के चलते ये फिल्म कालजयी बन गई।

'ज्वेल थीफ' की कहानी बेहद रोमांचक थी। देव आनंद की एक्टिंग वाली इस सनसनीखेज कहानी ने सिनेमाघरों में रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। फिल्म ने देव आनंद की लोकप्रियता दोगुनी कर दी थी। देश की पहली डार्क कॉमेडी फिल्म का तमगा 'जाने भी दो यारो' को दिया जाता है। फिल्म का बजट इतना कम था कि नसीरुद्दीन शाह अपने घर से कैमरा और अपने कपड़े लेकर आते थे। फिल्म में अनुपम खेर का भी रोल था जो रिलीज से पहले पूरी तरह कट गया था। हिंदी फिल्मों की हिट फिल्मों का जिक्र हो और 'शोले' का नाम न आए, ऐसा हो नहीं सकता। इसे सबसे बड़ी सुपरहिट फिल्म कहा जाता है, जिसने इसमें शामिल हर कलाकार को कालजयी बना दिया। फिल्म में अमिताभ-धर्मेंद्र की जोड़ी ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया था और गब्बर सिंह के किरदार में अमजद खान अमर हो गए। देव आनंद और वहीदा रहमान के लीड रोल वाली फिल्म 'गाइड' अपनी कहानी और गानों के चलते हिट हुई थी। राजेश खन्ना की सबसे संजीदगी भरी अदाकारी के लिए याद की जाने वाली फिल्म 'आनंद' ने उस वक्त कामयाबी के रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। इसमें अमिताभ बच्चन ने डॉक्टर किरदार निभाया था। अमिताभ की ही 'अमर अकबर एंथोनी' बचपन में बिछड़े भाइयों की कहानी थी, जिसने सफलता के रिकॉर्ड तोड़े थे। डायरेक्टर मनमोहन देसाई ने अखबार में छपी एक खबर को आधार बनाकर इस फिल्म को बनाया था। अनिल कपूर की सुपरहिट फिल्मों में से एक 'तेजाब' ने माधुरी दीक्षित को बतौर एक्ट्रेस स्थापित किया था। अनिल कपूर की ही 'मिस्टर इंडिया' को सुपरहिट कहा जाता है। गायब होने वाला हीरो और एक दमदार विलेन मोगैंबो ने हिंदी सिनेमा को एक संजीवनी दी थी। तात्पर्य यह कि 'स्त्री-2' ने यदि आज बॉक्स ऑफिस पर कमाई का नया रिकॉर्ड बनाया है, तो उसकी सीढ़ियां ये फ़िल्में बनी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

कोई यह कहे कि किसी क्षेत्र का इतिहास 110 दस साल पुराना है जिसमें से 60 साल तक एक ही व्यक्ति ने उस क्षेत्र पर राज किया, तो उसे इतिहास पुरूष का नाम देते देर नहीं लगेगी।

हिन्दी सिनेमा में भी ऐसा ही एक इतिहास पुरुष है जिसने सिनेमा के 110 साल के इतिहास में 60 बरस तक लगातार फिल्मी दुनिया पर राज किया और मौत के 15 बरस बाद भी उन्हें शिद्दत के साथ याद किया जाता है।

101वीं जयंती
26 सितंबर

जिंदगी को हमेशा आनंद की तरह जिया

प्रयदि आज देव आनंद जिंदा होते तो अपनी 101वीं जयंती मना रहे होते। लगभग दौड़ने की मुद्रा में चलने वाले देव आनंद के साथ यह संयोग था कि चालीस के दशक में जब भारतीय फिल्म इंडस्ट्री अपने पैरों पर खड़े होकर दौड़ने की तैयारी कर रही थी, तब इसे रफ्तार देने 23 साल के देव आनंद 30 रूपए जेब में लेकर फिल्म सिटी मुंबई पहुंचे। 26 सितम्बर 2023 को पंजाब के गुरूदासपुर में जन्मे देव आनंद एक उच्च शिक्षित परिवार से संबंधित थे। उनके पिता जाने माने एडवोकेट थे और बड़े भाई चेतन आनंद गुरूकुल कांगडी से पढाई कर रविन्द्रनाथ टैगोर के विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। पढ़ाई के मामले मे देव आनंद भी काफी होशियार थे।

देश के विभाजन से पहले देव आनंद ने फिल्मी दुनिया में कदम रखा, लेकिन उस दौरान उन्होंने अपनी शिक्षा को नहीं छोड़ा और एक्टिंग के साथ-साथ पढ़ाई में रुचि लगाए रहे। देव आनंद ने शुरुआती हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद लाहौर गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज से इंग्लिश में बीए ऑनर्स की पढ़ाई पूरी की थी। वह इंग्लिश लिटरेचर में मास्टर यानी एमए की डिग्री हासिल करना चाहते थे। लेकिन, परिवार की आर्थिक स्थिति को मद्देनजर रखते हुए अभिनेता की ये ख्वाहिश अधूरी रह गई। फिर भी पढ़ने के प्रति उनकी ललक ताउम्र बनी रही।

साल 1946 में आई 'हम एक हैं' फिल्म के जरिए देव आनंद ने हिंदी सिनेमा में कदम रखा था। इस फिल्म के मिलने का किस्सा भी कम रोचक नहीं है। देव आनंद लोकल ट्रेन में सफर कर रहे थे। वहीं उन्हें 'प्रभात फिल्म कंपनी' के बारे में पता लगा, जो एक फिल्म के लिए हीरो की तलाश में थी। अगले दिन देव आनंद उस कंपनी में मुलाकात के लिए पहुंच गए और कंपनी के मालिक बाबूराव पाई से मिले। बाबूराव उनकी बातों और पर्सनैलिटी से इम्प्रेस हुए।इसके बाद देव आनंद की मुलाकात पीएल संतोषी से हुई, जिन्हें देव आनंद के बात करने का अंदाज काफी पसंद आया। इस तरह देव आनंद को पहली फिल्म 'हम एक हैं' मिली। यहां से देव आनंद का फिल्मी करियर तो शुरू हो गया, लेकिन उनकी डेब्यू फिल्म बुरी तरह पिट गई।

इस फिल्म के निर्माण के दौरान देव आनंद को गुरुदत्त के रूप में दोस्त मिला जिनकी दोस्ती आजीवन चली। दोनों ने ही एक साथ संघर्ष किया और उन्हीं दिनों दोनों में तय हुआ था कि जो भी पहले फिल्म डायरेक्शन में हाथ आजमाएगा, वह दूसरे को अपनी मूवी में मौका देगा। 1948 में 'जिद्दी' आई, जो देव आनंद के करियर की पहली हिट मूवी साबित हुई। फिल्म की कामयाबी के बाद देव आनंद ने प्रोडक्शन में हाथ आजमाया और 'नवकेतन बैनर' की स्थापना की। इस बैनर तले उन्होंने 1950 में पहली फिल्म 'अफसर' बनाई। फिल्म बुरी तरह पिटी।

इसके बाद देव आनंद को गुरुदत्त की याद आई। जिनके निर्देशन में उन्होंने 'बाजी' फिल्म बनाई, जो बॉक्स ऑफिस पर हिट साबित हुई। इस फिल्म के बाद देव आनंद भरोसेमंद एक्टर

के तौर पर पहचाने जाने लगे। इसके बाद उन्होंने 100 से अधिक फिल्मों में अपने अभिनय का लोहा मनवाया। इस दौरान उन्होंने गाइड, बाजी, जॉनी मेरा नाम, पेइंग गेस्ट, गैंबलर, काला पानी, सीआईडी और हरे राम हरे कृष्णा, तेरे मेरे सपने और देस-परदेस सहित कई बेहतरीन फिल्मों के जरिए दर्शकों को भरपूर मनोरंजन किया।

अपने जमाने में बॉलीवुड के सबसे सुदर्शन अभिनेता माने जाने वाले देव आनंद दिखने में जितने खूबसूरत थे, बोलने में उतने ही शालीन और सौम्य। हालांकि, वह लोगों के सामने एक तरीके से अपनी बात रखना भी जानते थे। रिस्क लेने से भी वह पीछे नहीं हटते थे। यही कारण था कि वे अखबार की हेडलाइन पर भी फिल्म बनाने का जोखिम यह सोचकर लेते की फिल्म कामयाब हो न हो, बात कहने में जरूर कामयाब हो गए हैं। इसीलिए उनकी सफल फिल्मों के साथ फ्लॉप फिल्मों की संख्या भी कम नहीं है। लेकिन तीन फिल्मों की असफलता के बाद उनकी एक फिल्म की सफलता उन्हें लगातार फिल्मों में बनाए रखती थी। उनके इसी गुण के कारण उन्हें लीप हीरो भी कहा जाता था।

देव आनंद शुद्ध रूप से मनोरंजक फिल्में बनाने में विश्वास रखते थे। उन्हे रोने धोने वाली पारिवारिक फिल्में बनाना पसंद नहीं था। यही कारण है कि उन्होंने ज्यादातर रोमांटिक और थ्रिलर फिल्मों में काम किया, जिनमें जब प्यार किसी से होता है से लेकर ज्वैलथीफ जैसी विविध पूर्ण फिल्में शामिल हैं। हॉलीवुड एक्टर ग्रेगरी पेक से समकक्ष माने जाने वाले देव आनंद ने अभिनय के साथ फिल्म निर्माण और निर्देशन किया। उन्होंने लगभग 35 फिल्मों का निर्माण किया, जिनमें से 18 बॉक्स ऑफिस पर सफल रही थीं। 13 फिल्मों की कहानी उन्होंने खुद लिखी थी।

देव आनंद ने जिंदगी को हमेशा आनंद की तरह जिया और अपने अंदर की जिंदादिली को

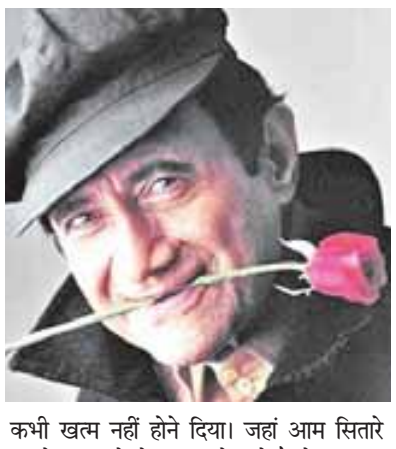

कभी खत्म नहीं होने दिया। जहां आम सितारे अपने प्रशंसकों से दूर भागते रहते हैं, देव आनंद ने हमेशा भीड़ के बीच खड़े रहकर आनंद पाया और आनंद बांटा। यही कारण है कि आज भले ही देव आनंद हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके प्रशंसकों ने उन्हें उनकी फिल्मों के जरिये अपनी यादों में बसाए रखा है।

ना जइयो, ना जइयो... परदेस !

प्रकाश पुरोहित

प्रिय मित्र,

जमाना तो खत-ओ-किताबत का कभी का खत्म हो गया, लेकिन यह बात ही कुछ ऐसी है कि मेरे दोस्त की चिट्ठी का सहारा लेना पड़ रहा है। क्या है कि वाट्सएप पर दो-चार लाइन तो ठीक है, लेकिन जब बात ज्यादा लंबी हो तो फिर ये पारंपरिक चिट्ठी ही मुझे जंचती है। बात तो फोन पर भी कर सकता था, लेकिन उसमें फ्लो नहीं आ पाता है और कई बार बात का बतंगड़ हो जाता है। वैसे भी हमारी दोस्ती की शुरुआत तो चिट्ठी से ही हुई थी, वरना हम एक-दूसरे को जानते कहां थे। यह अलग बात है कि तब हर हफ्ते चिट्ठी आती-जाती थी और अब बरसों बीत गए ! मन में घुमड़ रहे विचारों को चिट्ठी ही समेट पाती है और बात कनवे कर देती है। गागर है चिट्ठी और सागर है विचार, खैर, !

तुमने पेरिस के बारे में इतनी ऊंची-ऊंची हांक दी कि पत्नी ने जिद पकड़ ली और सपरिवार पेरिस घूमने गया। सोच रहा था, लौट कर जब हम मिलेंगे तो वहां की इतनी-इतनी बातें करेंगे कि सुनने वाले भी बोरिया-बिस्तर बांधने लगें। तुमने जिस तरह से पेरिस का बखान किया था, लगा था, एक बार तो जाना ही चाहिए। स्कूल के दिनों में जब शम्मी कपूर की फिल्म 'एन इवनिंग इन पेरिस' हमने साथ देखी थी, तब भी यही तय किया था ना कि यार, एक बार तो पेरिस जरूर जाएंगे और फिल्म का टाइटल गीत एफिल टॉवर पर चढ़ कर दुनिया को सुनाएंगे। सुन रखा था कि पेरिस में अगर अंग्रेजी में सवाल पूछो तो कोई जवाब नहीं देता है और मुंह फुला लेता है। जिन्हें आती है, वे भी यूं मुंह फेर लेते हैं, जैसे सामने वाला जापानी बोल रहा हो। इसी चक्कर में गूगल बाबा की बदौलत कुछ जरूरी शब्द हमने रवाना होने से पहले कंठस्थ कर लिए थे कि हफ्ता-दस दिन ही तो रहना है, क्यों किसी का दिल दुखाया जाए। जब अपनी भाषा नहीं होती है तो थोड़ी घबराहट तो होती है कि कहीं फंस ना जाएं, परदेस का मामला है। ऐसी झटपट पढ़ाई तो करीब तीस साल पहले भी नहीं की होगी, जब सोशलॉजी में एमए किया था।

भाई, जब हम सपरिवार पेरिस में उतरे तो पहले से तय होटल में जा कर ठहर गए। बाहर निकलने का मन हो रहा था, मगर अता-पता कुछ नहीं था। पत्नी से कहा- 'मैं राउंड लगा कर आता हूं' और यूं निकल पड़ा, जैसे वीर सिपाही युद्ध के लिए निकलता है। सोच रहा था, ना जाने कैसा होगा पहला दिन पेरिस में। डर भी था कि अजनबी शहर में अकेला कर भी क्या लूंगा ! होटल से सड़क पर आया तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि यह कोई पराया देश है। होटल के आसपास तो ऐसा माहौल था, जैसे पेरिस में नहीं, पंजाब में हूं। एक दुकान में जा कर मेट्रो स्टेशन के बारे में पूछा, उसने एकाध जवाब तो अंग्रेजी में दिया, फिर घूर कर बोला- 'हिंदी नहीं आती क्या, लगते तो हिंदुस्तानी ही हो?' मेरी तो मुरझाई बांछें खिल गईं और थोड़ी ही देर में देखता क्या हूं कि जो भी आ रहा है या तो पंजाबी में बोल रहा है या फिर हिंदी में। हर तरह की भारतीय भाषा यहां सड़क चलते सुनने को मिली।

वो किस्सा याद आ गया कि एक व्यक्ति को रोजगार की तलाश थी। उसे किसी ने सुझाया कि चिड़ियाघर में नौकरी मिल जाएगी। जब वहां पहुंचा तो उसे बताया गया कि उसे भालू बन कर पिंजरे में रहना है, क्योंकि भालू भाग गया है। जब वह भालू बन कर चिड़ियाघर में गया तो देखा सामने शेर था। वह घबरा गया, तभी शेर बोला 'डरो मत मैं भी तुम्हारे जैसा ही रोजनदारी वाला हूं।' यह सुन कर सभी जानवर बोल उठे 'हम भी... हम भी।' तो मुझे यहां वही चिड़ियाघर वाला किस्सा याद आता रहा कि सभी तो भारतीय ही थे, तो वो लोग कौन हैं, जो अंग्रेजी में जवाब नहीं देते हैं। अब समझ पा रहा हूं कि जिन्हें पंजाबी या हिंदी ही आती है, अगर अंग्रेजी में जवाब नहीं दे रहे हैं तो हमें कोई हक नहीं बनता कि फ्रेंच लोगों को रिजिड या नकचढ़ा कहें कि अंग्रेजी में पूछे गए सवाल का जवाब नहीं देते हैं। भारतीय और फ्रेंच में फर्क तो देखना चाहिए ना ! किसी को फोकट क्यों बदनाम करना !

ये तो हुई भाषा की बात कि जो फ्रेंच शब्द मैंने बड़े जतन से याद किए थे, धरे के धरे रह गए और उन्हें इस्तेमाल करने का मौका एक बार भी पेरिस के लोगों ने नहीं दिया। विदेश में सबसे बड़ी मुश्किल भारतीय भोजन की होती है कि जब तक हम दाल-चावल, सब्जी-रोटी उदरस्थ ना कर लें, 'पेट है कि मानता नहीं।' मुझे तो यही लगता है कि भारतीय भोजन के लिए ही ज्यादातर लोग विदेश जाते हैं, क्योंकि उतरते ही पूछते हैं- 'इंडियन रेस्टॉरेंट किधर है?' फ्रेंच लोग क्या खाते हैं, यह पता नहीं और जो हम खाते हैं, यहां क्यों मिलेगा। यही सोचता जा रहा था कि आसपास नजर दौड़ाई तो यूं लगा दिल्ली की पराठा गली या इंदौर के सरवटे बस-स्टैंड पर खड़ा हूं। लाइन से एशियाई होटलें भारतीय खाने की सुगंध फैला कर ललचा रही थीं। कुछ साल पहले चमत्कारी वशीकरण मंत्र बिकता था ना, जो मांगोगे वही मिलेगा, यहां भी यही हाल था कि आप जो आर्डर करें, सब हाजिर है। जेब के पूरे हैं तो खाने की कोई कमी नहीं। घुटी हुई, कड़क, मीठी चाय से ले कर साउथ इंडियन तक। उस पूरे इलाके में कहीं एक तो फ्रेंच रेस्टॉरेंट नजर आ जाए, मेरी यह हसरत ही बनी रही। हर दुकान पर या तो भारतीय या कोई एशियाई ही नजर आ रहा था।

उस पूरे इलाके में सभी अपने जैसा ही था। करीब चार घंटे तक भटक कर इसी नतीजे पर पहुंचा कि इतना पैसा खर्च कर क्या सिर्फ एफिल टॉवर देखने आया हूं, क्योंकि अभी तक एक भी फ्रेंच व्यक्ति नजर नहीं आया था। शक होने लगा कि फ्रांस की राजधानी पेरिस ही है या पटियाला, पटना या पुणे ! इमारतें और सड़कें ही फ्रेंच हैं, वरना तो उस शहर पर हम ही तो राज कर रहे हैं।

क्या अब लगभग अक्खी दुनिया ही भारत नहीं होती जा रही है? बड़े से बड़े देश में चले जाएं, छोटा-मोटा भारत वहां बस गया है। इंग्लैंड के लॉर्ड्स में रास्ता भूल गया था तो 'जिग्नेश भाई' आवाज़ लगाई थी तो चारों दिशाओं से आधा दर्जन जिग्नेश भाई निकल आए थे- 'बोलो भाई, केम छो?' यह फार्मूला मुझे वहीं के मेरे मित्र ने बताया था, जो हमेशा कारगर रहा। इसलिए मेरा मानना है कि अब दुनिया घूमने का वो चार्म नहीं रहा, क्योंकि हर जगह तो वही भारत है, जिससे भाग कर हम विदेश जाते हैं।

(अब) तुम्हारा (नहीं) दोस्त... !

कलमकार गुलज़ार जिया जले गीतों की कहानियाँ

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

वह इक शायर है, गीतकार है, स्क्रिप्ट लिखता है। अनोखे लफ्ज़ों का इस्तेमाल करता है। चांद तारे उसकी नज़्म में हमेशा रहते हैं। वो संजीदा बात लिखता है तो भेजे में गोली मारने को कहता है जिगर से बीड़ी जलाने को कहता है, और उसका दिल ढूंढता है फुर्सत के रात दिन। ऐसी तमाम बातों के बारे में जिन्?हें आप जानते हैं उनका नाम 'गुलजार' है। लंदन में रह रही नसरीन मुन्नी कबीर और अनुवादक युनुस खान ने मिलकर एक अनोखा इंटरव्यू रचा है। यह पुस्तक के रूप में 2023 में राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित है। इसमें गुलजार के प्रसिद्ध गीतों के पीछे की दास्तान बताई गई है। मैं इस बारे में पहले ही लोगों की आलोचना सह चुकी हूं कि हर नज़्म के पहले मैं एक विचार क्यों लिखती हूँ पर गुलज़ार साहब मशहूर शख्सियत हैं तो ये सवाल उनसे पूछा गया और साक्षात्कार के रूप में लिखा गया। पूरा तो आप पुस्तक पढ़कर ही जानेंगे मगर कुछ वार्ता, गीत आपके समक्ष रखती हूँ ताकि पढ़ने की उत्सुकता बनी रहे।

पुस्तक में ना सिर्फ गानों की बल्कि म्यूजिक डायरेक्टर्स की, हाल की फिल्म की, सिंगर की बातें हुई हैं, जैसे मणिरत्नम की फिल्म 'दिल से' एआर रहमान द्वारा पहली बार लता मंगेशकर को चैन्नई बुलाकर ''जिया जले'' गाना गंवाना शामिल है। गाने के पहले मणिरत्नम से उन्होंने गाने की सिचुएशन पर काम किया जिसकी थीम थी सुहागरात जिसमें अभी शादी नहीं हुई थी पर दुल्हन अपनी भावनाओं के बारे में बता रही थी। मसलन एक लाइन ''मसले फूलों की महक'' रात भर बेचारी मेहंदी पिसती है पैरों तले'' सेन्सुअस लाइन है पर अश्लील नहीं। नसरीन जी ने इस फिल्म के और गानों पे भी चर्चा की जिसे मज़ा आ गया। ये भी पता चला जैसे ए.आर. रहमान अपनी रिकॉर्डिंग चेन्नई में करते हैं वैसे गुलज़ार साहब मुंबई में अपनी टेबल पर लिखते हैं।

''ओंकारा'' का मिज़ाज़ बिल्कुल अलग किस्म का था जिसमें गुंडे, मवाली, नाचने वाली अवधी बोली में गाली देकर गीत गाती है गुलज़ार साहब के बोल सुन मैं दंग रह गई एक तरफ ''जय हो'' लिखने वाले दूसरी तरफ ''कजरारे'' कजरारे और ''बीड़ी जलई ले जिगर से पिया'' (लोक गीत) लिखते हैं बिपाशा बसु बिल्लो का किरदार निभा रही थी उन्होंने भी एक-एक शब्द समझा और ''नमक इश्क का'' जिसे गुलज़ार साहब ''प्यार का मसाला कहते हैं पहली लाइन थी'' मैं चांद निगल गई। इस गाने से पहले उन्होंने दोहा रखा जो थीम की झलक थी गुलज़ार साहब कहते हैं ये एक पंच लाइन है। विशाल भारद्वाज की फिल्मों के लिये किरदारों के हिसाब से गीत लिखते हैं कई बार बिल्कुल छंद मुक्त गीत भी काम आते हैं उनकी फिल्म में वो कहते हैं विशाल किसी थीम पर टिकते नहीं। रात भर छाना छाना रे नमक इश्क़ का, भीतर भीतर आग जरे (जले) सबसे ज़्यादा गीत ''पंचम'' के लिए लिखे अब विशाल के लिये। बात बहुत लंबी है, अब अभिषेक चैबे की मशहूर फ़िल्म इश्क़िया (2010) की बात करें तो ''दिल तो बच्चा है जी'' का ज़िक्र लाज़मी हो जाता है। जिसमें उम्रदराज खालूजान जिनके प्यार में पड़ने की उम्र बीत चुकी होती है। लफ़्जों की बाजीगरी में हाजी, पीरी, वल्लाह, ये खालू की शख्सियत को बताते हैं जरा आप भी शब्दों पे गौर फरमायें जो तहज़ीब दर्शाते हैं:-

ऐसी उलझी नज़र, उनसे हटती नहीं
दाँत से रेशमी डोर कटती नहीं
उम्र कब की बरस के सुफ़ैद हो गई
कारी बदरी जवानी की छँटती नहीं
वल्लाह ये धड़कन बढ़ने लगी है
की रंगत उड़ने लगी है
डर लगता है तन्हा सोने में जी
दिल तो बच्चा है जी
थोड़ा कच्चा है जी
हाँ दिल तो बच्चा है जी ...

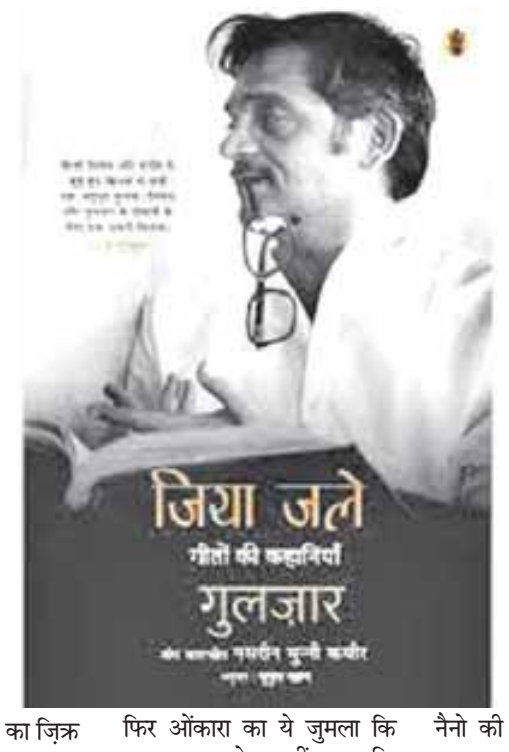

गुलज़ार साहब का कहना था दिल सदा जवान रहता है, यहां राहत अली फतेह खाँ की गुलज़ार साहब बहुत तारीफ करते हैं उन्होंने अपने हिसाब से ''सफेद'' की जगह शब्द को ''सुफेद'' कर दिया है जो पंजाबी शब्द है गुलज़ार साहब को ये बात बहुत पसंद आई। फिर ओंकारा का ये जुमला कि नैनो की जुबान पर भरोसा नहीं आता लिखत पढ़त ना रसीद ना खाता जिसका गीत आगे थानैनो की मत सुनियो रे,

नैनो की मत मानियो रे
नैना ठग लेंगे

रेखा भारद्वाज में गुलज़ार साहब कहते हैं एक रूहानियत है। ''तेरी रज़ा, मेरी रज़ा'' में उनकी आवाज़ में रूहानी रंग है, और गुलज़ार साहब खुद नहीं कहेंगे पर खुशबू उनके अल्फ़ाज की है। गुलज़ार साहब ने ''गंगा आए कहां से गंगा जाये कहा रे'' को दोहे के फार्म में लिखा जो खूब प्रचलित हुआ दरअसल लफ़्ज़ लिखने वाले को भी संतोष होना चाहिये कि उनके दोहे, कविता, गीत सही धुन से गाये गये। यूँ गुलज़ार साहब ने हेमंत दा के साथ काम किया। गुलज़ार साहब कहते हैं पूरी टीम के साथ मिलकर काम करना पड़ता है यूँ नहीं गीत लिख कर दे दिया कई बार निर्देशक विकल्प मांगता चला जाता है हम कोई छोले भटूरे तो नहीं पका रहे हैं। गीत लिखना संजीदा काम है।

''दिल हूम हूम करे'' अगर सुनते हैं तो सच में ''हूम हूम'' होती है दिल में। गुलज़ार साहब के शब्दों के साथ लता जी और भूपेन हजारिका ने अपनी असमी आवाज में पूरा न्याय किया। रुदाली एक राजस्थानी कहानी थी तब भी गुलज़ार साहब ने उसे उसी टोन में लिखा

''तेरी झोरी डारूँ, सब सुखे पात जो आए
तेरा छुआ लागे, मेरी सूखी डार हरियाए

उफ़्फ़ गुलज़ार साहब आपके पास कभी ना सूखने वाला शब्दों का कुआँ है क्या? जावेद साहब कहते हैं ''जब मैं कोई गाना सुनता हूँ तो पहली लाइन से ही समझ जाता हूँ ये आपका लिखा हुआ है। गुलज़ार साहब ने कविताओं के अलावा उपन्यासों का हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी में अनुवाद किया। अनुवाद में अदायगी बेहतर होनी चाहिये। अब बेहद मशहूर गाने की बात करती हूँ। उसके बाद गीतों की बात अगले भाग तक चलेगी क्योंकि मैं खुद इन गीतों की खुसूसियत से वाक़िफ़ हूँ तो क्यों ना आपको भी उनसे मिलवाऊँ ठीक है मणिरत्नम का निर्देशन, रहमान का संगीत, संतोष सिवन की फोटोग्राफी, फरहा खान की कोरियोग्राफी, शाहरुख खान, मलाइका की अदाकारी सुखविंदर और सपना अवस्थी की आवाजें और ऊटी के पहाड़ों पर दौड़ती ट्रेन और अल्फ़ाज़ गुलज़ार साहब के आप समझ गये होंगे मैं ज़िक्र कर रही हूँ ''चल छैंया छैंया छैया'' का। नसरीन मुन्नी ने स्वयं ''इनसाइड मैन'' के लिये इस गाने को अंग्रेजी में अनुवाद किया था

जिनके सर हो इश्क़ की छाँव
पांव के नीचे जन्नत होंगी
जिनके सर हो इश्क़ छांव
चल छैयाँ छैयाँ छैयाँ छैयाँ

गुलपोश शब्द के इस्तेमाल पर गजब की लाइन है ''गुलपोश'' मानी ''फूलों की पोशाक वाली''

गुलपोश कभी इतराये कहीं
महके तो नज़र आ जाये कहीं
तावीज बना कर पहनूँ उसे
आयत की तरह मिल जाये कहीं

हालांकि उन्होंने इसे सूफी संत की दरगाह से भी जोड़ा है अगली बार हम सुनेंगे पढ़ेंगे ''आंखें कैसे महकती हैं'' आगे और भी कहेगी ज़िंदगी...।

पेंटिंग जैसा फोटो ...

सड़क पर उभरा चित्रांकन

फोटो: गिरीश शर्मा

जड़े

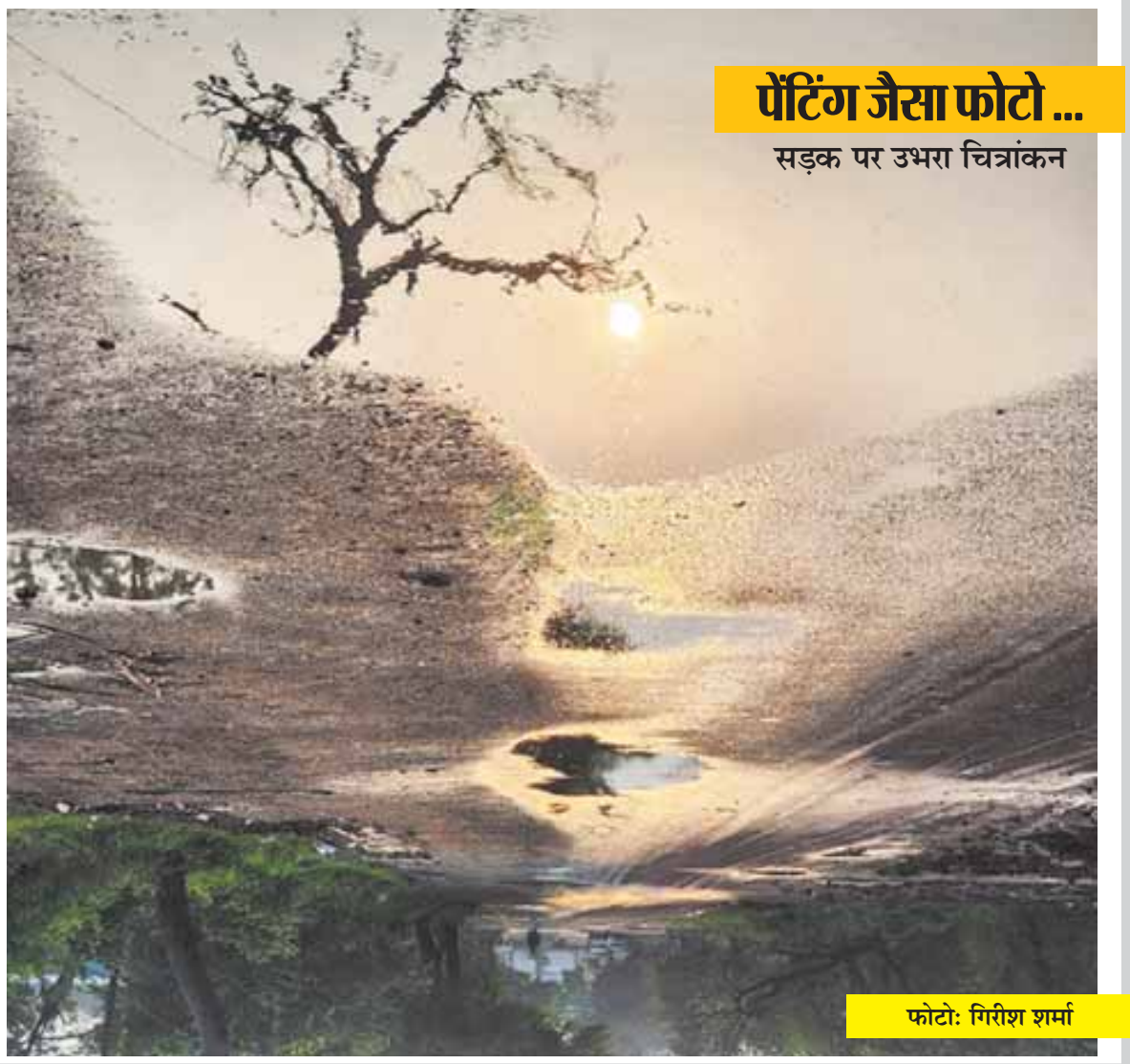

अविनाश अग्निहोत्री

सुनो,पापा जी बता रहे थे कि पिछले कई दिनों से आप उनका फोन नही उठा रहे हो। चाय का कप हाथ में पकड़ाते हुए रचना ने अपने पति शोभित से कहा। हां नही उठा रहा हूं,व्यथित होकर शोभित बोला। पर ये तो ठीक नही,रचना ने उसे समझाते हुए कहा। थोड़े समय पहले उन्होंने कुछ पैसों की जरूरत बताई थी। जो मैं पूरी ना कर सका अब तुम ही बताओ रचना मैं उनसे कैसे बात करूं।इतना कहते उसकी नजरें झुक गई। अरे तो वो हमारे पिता है हमारी मजबूरी भी समझेंगे।लो एक बार उनसे बात करो।रचना उसके कंधे पर हाथ रख अब अपने ससुरजी को फोन लगाने लगी। इधर से शोभित के हैलो बोलते ही उसके पापा बोले,मेरा एक पुराना चेक बैंक से क्लियर हो गया है बेटा। हमें अब पैसे भेजने की कोई जरूरत नही और हां उसमे से कुछ पैसे मैंने तेरे अकाउंट में भी ट्रांसफर किए है। मुझे पता है तेरा काम काज भी अभी ठीक नही चल रहा है।बस यही बताने के लिए फोन कर रहा था। पर वो पैसे तो आप दोनों के बुढ़ापे में काम आ जाते पापा, मुझे क्यों भेजे। शोभित ने बड़ी हिम्मत से भर्राए स्वर में दूसरी ओर से कहा। तब वो मुस्कुराकर बोले हमें अपने बुढ़ापे की भला क्या चिंता उसके लिए तो तू है न बेटा। और हां जड़े अगर जमीन से सोखा हुआ पानी पौधे को देना बंद करदे दो पौधे को मुरझाते देर नही लगेगी। इतना कहते हुए उसके पापा ने फोन रख दिया और शोभित अपनी डबडबाई आंखे पत्नी के सामने पोछने की नाकाम कोशिश करने लगा।

अगर कल्पना को पर लगाने हैं... !

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

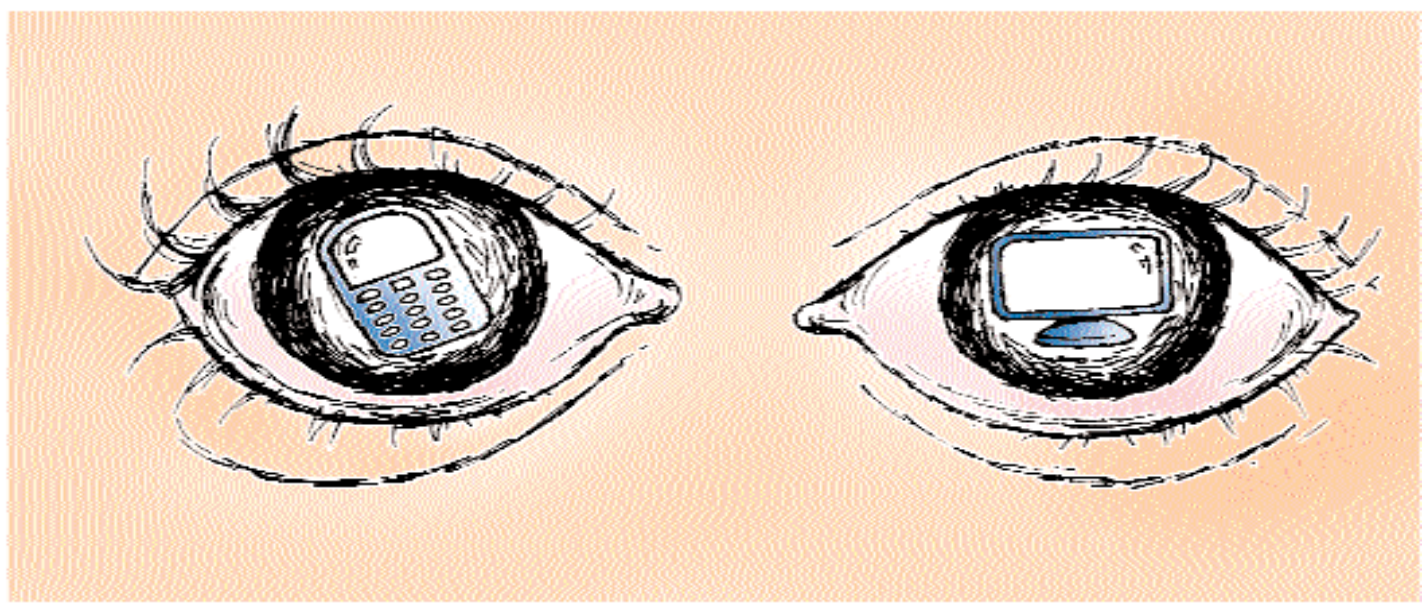

कहावत है कि जिन्न बोतल से बाहर आ गया या पैंडोरा बॉक्स खुल गया, वैसे ही हालात हैं। स्मार्ट फोन और स्मार्ट वॉच के साथ जीवन ऑनलाइन है। जो भी ऑनलाइन दुनिया में युवाओं की भागीदारी को कम करना चाहते हैं, यह नहीं समझ पाते कि परियों की कहानियों में उन्हें दी गई कल्पना का उपयोग कैसे किया जाए। इंटरनेट पर मौजूद सामाजिक बुराइयों के कई उलझे कारण हैं, पर इंटरनेट को बच्चों की पहुंच से दूर कर ठीक नहीं किया जा सकता है।

सेहत के लिए खान-पान की अच्छी आदत जरूरी है, इंटरनेट का समय से उपयोग जरूरी है। ऑस्ट्रेलियाई सरकार सोशल मीडिया के उपयोग के लिए उम्र सोलह साल कर रही है। इंग्लैंड में बच्चों की ऑनलाइन के लिए सख्त कानून हैं। साल की शुरुआत में सरकार ने स्कूलों में दोपहर के भोजन और क्लास के दौरान फोन पर पाबंदी लगा दी थी। इंग्लैंड में अकादमी के चवालीस स्कूलों में बच्चों से स्कूली समय में फोन ले लिए जाएंगे। विज्ञान सचिव पीटर काइल ने कहा है कि वह अंडर-16 के लिए सोशल मीडिया खातों पर बैन लगाने में ऑस्ट्रेलिया का फार्मूला लागू करने पर विचार करेंगे। स्मार्ट फोन का उपयोग इंग्लैंड के स्कूलों के सामने बड़ी चुनौती नहीं है। शिक्षकों की कमी, बाल गरीबी और धन की कमी पर ध्यान देने की जरूरत है। फोन पर बैन को ढोंग की तरह देखा जा सकता है।

सीमाएं तय करने में माता-पिता, समाज, गुरुजी की भी भूमिका होती है। बच्चों के बिगड़ते दिमागी हालात या उन दुःखद मामलों को खारिज कर सकता है, जिनमें ऑनलाइन मुठभेड़ों ने युवाओं की मौत हुई हैं। सब जान गए हैं कि बच्चों की सुरक्षा के लिए सोशल मीडिया पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। बच्चों को इससे दूर रखने के लिए सामाजिक कोशिश जरूरी है, फिर यह चाहे स्कूलों का थोपा गया हो या स्मार्ट फोन मुक्त बचपन अभियान हो।